तेरी चाहत में

प्यार, बेवफाई, धोखे और मर्डर मिस्ट्री की तीन रोचक दास्तान ।

अनन्या पाठक

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ananya Pathak 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-829-7

Cover Design: Shubham Verma
Typesetting: Sagar

First Edition: March 2025

अनुक्रमणिका

मिट्टी की गुल्लक.. 1

किडनैपर.. 25

राखी का कसूरवार.. 70

मिट्टी की गुल्लक

ऋचा मैं तुझसे कुछ बात करना चाहता हूँ छवि के बारे मे" - पैंसठ वर्षीय आनंद प्रकाश ने अपनी तीस वर्षीय बेटी से याचना पूर्वक शब्दों में कहा।

"अभी नहीं पापा कल मेरी ऑफिस में एक बहुत ही जरूरी मीटिंग है मुझे उसके लिए एक प्रेजेंटेशन बनानी है।"- ऋचा ने आनंद प्रकाश की ओर देखे बिना ही अपने लैपटॉप पर तेजी से उंगलियाँ चलाते-चलाते उत्तर दिया।

"लेकिन मेरी बात तो सुन"

"पापा प्लीज!!!!प्लीज हम कल बात करें,- रात के साढ़े दस बज चुके हैं मैं थोड़ा और काम करूँगी। आप जाकर सो जाइए। और हाँ रूबी को कह दीजिए कि एक कप ब्लैक कॉफ़ी यहाँ भिजवा दे।

"ठीक है बेटा! "- कहकर असहाय भाव से आनंद प्रकाश वापस जाने के लिए मुड़े।

आनंद प्रकाश एक सेवानिवृत्त सरकारी स्कूल के शिक्षक थे। उनकी पत्नी का देहांत हो चुका था। वह मूल निवासी प्रयागराज के थे लेकिन अब दिल्ली के करोलबाग में अपनी इकलौती तलाकशुदा बेटी ऋचा और उसकी तेरह वर्षीय

बेटी छवि के साथ रह रहे थे। ऋचा एक रियल एस्टेट एजेंट थी और एक रियल एस्टेट फर्म में काम करती थी। अक्सर वह काम के सिलसिले में बाहर रहती थी। ऐसे में आनंद प्रकाश ही छवि की देखभाल करते थे। घरेलू काम-काज और खाना बनाने के लिए उन्होंने एक नौकरानी रखी हुयी थी रूबी।

****

आनंद प्रकाश की इकलौती संतान थी ऋचा जिसे वह पढ़ा लिखा कर एक डाक्टर या अपने स्वर्गवासी पिता जी की तरह एक वकील बनाना चाहते थे। ऋचा जब मात्र सत्रह वर्ष की थी तब वह अपने स्कूल के सहपाठी रोहन के प्यार में पड़ गयी थी। ऋचा पढ़ाई लिखाई मे तो शुरू से ही काबिल थी लेकिन रोहन की मोहब्बत में वह ऐसा गिरफ्तार हुयी कि उसे उसके अलावा किसी और चीज में ध्यान ही नहीं था। उसके नंबर कम आने लगे, आनंद प्रकाश ने उसे प्यार से मार से सब तरह से समझाने की कोशिश की मगर ऋचा पर इन सब का कुछ असर नहीं हुआ वह तो रोहन के प्यार में सब कुछ भुला बैठी थी। ठीक बारहवीं की बोर्ड परीक्षा से पहले वह घर से कुछ रूपये ले कर रोहन के साथ भाग गयी, घर में एक चिट्ठी छोड़ कर कि वह अब कभी वापस नहीं आएगी और वह अपनी मर्जी से घर छोड़कर जा रही है। इस घटना का आनंद प्रकाश पर गहरा प्रभाव पड़ा, वह बेहद गुमसुम रहने लगे थे उनकी पत्नी सुधा उन्हें बहुत समझाने का प्रयास करती मगर आनंद प्रकाश अपने आप में ही घुटते जा रहे थे। आनंद प्रकाश जैसे शिक्षक की बेटी ऐसा कुछ कर जाएगी इसकी किसी को भी उम्मीद नहीं थी। आनंद प्रकाश अब लोगों के सामने जाने से भी कतराते उन्हें लगता कि जैसे सब लोगों की व्यंगय भरी निगाहें उनके अंतर्मन को छलनी कर देंगी। इसी तरह तीन-चार महीने निकले , एक दिन ऋचा वापस आयी मगर अकेली नहीं अपने पेट में तीन महीने का बच्चा साथ ले कर। वह बिन ब्याही माँ बन गयी थी। आनंद प्रकाश को मानों काटो तो खून

नहीं, उन्होंने इस प्रकार की स्थिति की कभी कल्पना नहीं की थी। पूछने पर ऋचा ने बताया कि वह और रोहन भाग कर मुंबई पहुँचे थे, जो पैसे लेकर ऋचा घर से भागी थी और कुछ पैसे रोहन के पास भी थे तो उन्हीं पैसों से उनका गुजारा चल रहा था। एक दिन जब उसे पता चला कि वह रोहन के बच्चे की माँ बनने वाली है तो उसने रोहन से षादी की बात की तो वह बिफर गया और उसे किराए के मकान में जहाँ वह पति-पत्नी की हैसियत से रह रहे थे वहाँ एक दिन बिना बताए अकेला छोड़कर भाग गया।

ऋचा की मकान मालकिन एक भली औरत थी, ऋचा ने जब उसे अपनी आपबीती सुनायी तो उसे ऋचा की हालत पर तरस आ गया। उसने उसे घर वापस आने का टिकट एवं कुछ पैसे देकर वहाँ से रवाना किया। ऋचा माँ-बाप की बात ना मान कर बहुत पछता रही थी। सब सुनने के बाद आनंद प्रकाश आनन फानन में गुपचुप तरीके से उसे अपने एक डॉक्टर दोस्त के क्लीनिक में ले गए ताकि उसका एबॉर्शन हो सके लेकिन डॉक्टर ने साफ मना कर दिया कि इसके लिए अब काफी देर हो चुकी थी। मरता क्या ना करता, अब आनंद प्रकाश के पास एक ही रास्ता बचा था ऋचा की शादी का। वह रोहन के घर गए। उन्होंने ऋचा के माता-पिता को रोहन की करतूत बतायी तो वह साफ मुकर गया कि वह बच्चा उसका नहीं है। यह सुनकर आनंद प्रकाश ने पहले तो रोहन और उसके परिवार वालों से मिन्नतें की ऋचा और उसके अजन्में बच्चे को अपनाने की लेकिन उनके इंकार करने पर जब आनंद प्रकाश ने पुलिस में जाने की धमकी दी तब रोहन के परिवार वालों को अक्ल आयी और उन्होंने बेमन से इस शादी के लिए हाँ कर दी।

सादे समारोह में ऋचा की शादी हुयी। आनंद प्रकाश ने अपने बहुत ही खास रिश्तेदारों को इस शादी में बुलाया था। अपनी इकलौती बेटी की शादी के लिए हर बाप की तरह आनंद प्रकाश ने बहुत अरमान संजोए थे लेकिन ऋचा की

एक गलती के कारण सब तबाह हो गया। ऋचा ससुराल गयी लेकिन ससुराल उसके लिए नरक से बदतर जगह बन गया। रोहन और उसके घरवाले ऋचा के साथ मार-पीट करते। उसे गंदी-गंदी गालियाँ और बिन ब्याही माँ बनने पर ताने दिए जाते, यहाँ तक कि रोहन का कहना था कि यह बच्चा उसका था ही नहीं। खैर तय, समय पर छवि का जन्म हुआ, लड़की पैदा होने पर ऋचा पर और जुल्म किए जाने लगे। उसे और उसकी बेटी को भूखा रखा जाता। आखिर ऋचा कब तक अपने आत्मसम्मान का सौदा करती ससुरालियों के साथ एक दिन उसने रोहन से तलाक लेने की ठानी जिसके लिए वह ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हो गया। इस घटना से ऋचा के मन पर बहुज आघात पहुँचा उसे इस बात की उम्मीद नहीं थी कि रोहन इतनी आसानी से उससे तलाक लेने को तैयार हो जाएगा। वो रोहन जो उससे प्यार के बड़े-बड़े दावे किया करता था, वो रोहन जो स्कूल में उन लड़कों से उलझ पड़ता था जो ऋचा के नजदीक भी जाने की कोशिश करते, वो रोहन जो स्कूल की छुट्टी के बाद ऋचा के घर के बाहर उसकी एक झलक के लिए खड़ा रहता था चाहे सर्दी हो, गरमी हो या बरसात हो । खैर, इंसान के जज्बात किसी के लिए कब बदल जाए ये कोई नहीं जानता। ऋचा और रोहन का तलाक हो गया। छवि तब तक दो साल की हो चुकी थी।

आनंद प्रकाश तलाक के बाद बेटी को अपने साथ अपने घर ले गए। ऋचा ने पढ़ाई शुरू कर दी। उसने अपना ग्रेजुएशन और फिर अपना मास्टर्स पूरा किया और दिल्ली में नौकरी ढूँढने का प्रयास किया। अब तक छवि सात साल की हो चुकी थी। आनंद प्रकाश भी सेवानिवृत्त हो चुके थे, उन्होंने भी अपना प्रयागराज का मकान बेचा और दिल्ली के करोलबाग में एक फ्लैट ले लिया। इस बीच ऋचा को भी एक रियल एस्टेट कंपनी में नौकरी मिल गयी जहाँ उसे शुरूआती सैलरी ठीक-ठाक मिल जाती थी। आनंद प्रकाश चाहते थे कि उनकी बेटी का घर बस जाए, उसे एक जीवनसाथी मिल जाए और वह सुकून से अपनी आखिरी साँसें ले सकें। लेकिन ऋचा ने अपनी दुनिया छवि में ढूँढ

ली थी। उसे दूसरी शादी में कोई रूचि नहीं थी, रोहन से मिले जख्मों को वह आज तक भुला नहीं पायी थी और क्यों ना हो अपने पहले प्यार को भुला पाना किसी के लिए भी आसान नहीं होता है।

गुजरते वक्त के साथ ही आनंद प्रकाश की पत्नी सुधा की हार्ट अटैक से मृत्यु हो गयी थी, अब घर में वह तीनों ही बचे थे। आनंद प्रकाश, ऋचा और छवि।

जैसे-जैसे छवि बड़ी होती जा रही थी वैसे-वैसे उसके स्वभाव में बदलाव आता जा रहा था। पढ़ाई में वह कमजोर थी, चिड़चिड़ी होती जा रही थी, स्कूल से आने के बाद वह अपने कमरे में बंद हो जाती थी, जब ऋचा आती तभी वह कमरे का दरवाजा खोलती, ट्यूशन खत्म हो जाने के बाद भी वह बहुत देर बाद ही घर में आती थी। ऋचा अपने काम में व्यस्त होने की वजह से छवि का उस तरह से ख्याल नहीं रख पाती थी जिस तरह एक माँ को अपनी बेटी का ख्याल रखना चाहिए, आनंद प्रकाश छवि के हाव-भाव देख और आजकल का माहौल देखकर बहुत चिंता में रहते थे।

सुबह नाश्ते की टेबल पर भी ऋचा लैपटॉप पर काम कर रही थी। रूबी किचन से गरमा गरम पराँठे उसकी प्लेट में लाकर रख रही थी। लेकिन वह खाने की जगह अपने काम में ही व्यस्त थी। उसके बगल की चेयर पर आनंद प्रकाश बैठे थे, वह चुपचाप अनमने ढंग से अपना नाश्ता कर रहे थे।

“मुझे और नहीं चाहिए, पापा की प्लेट में एक पराँठा और डालो रूबी” - अपना नाश्ता जल्दी-जल्दी खत्म करते हुए ऋचा ने रूबी को ऊँची आवाज में कहा।

“क्या हुआ पापा, बहुत चुपचाप हैं आप”

“क्या करूँ तेरे पास घर की तरफ ध्यान देने का टाईम ही कहाँ है”- आनंद प्रकाश ने रूबी को अपना एक हाथ उठा कर पराँठा ना लाने का इशारा किया।

“ऐसा क्यों कह रहे हैं पापा, आफिस में बहुत ही ज्यादा काम है, कल मैं !!!!!”

“ऋचा तू एक रियल एस्टेट एजेंट होने के साथ-साथ एक जवान हो रही बेटी की माँ भी है, बेटी तुझे छवि का भी ध्यान रखना है। मेरी वह बिल्कुल भी नहीं सुनती है, कुछ कहो तो उल्टा काट खाने को दौड़ती है। तूने उसे स्कूटी दे रखी है खरीदकर, तूने उसे मोबाईल दे रखा है। स्कूल के बाद का सारा दिन वह स्कूटी पर यहाँ-वहाँ घूमती है, उसके ट्यूशन टीचर ने एक दिन फोन किया था, बताने को कि वह कई-कई दिन ट्यूशन नहीं आती है, जबकि घर से वह ट्यूशन का बोल कर निकलती है”- आनंद प्रकाश ने ऋचा की बात बीच में ही काट कर अपनी बात कही।

“पापा आप भी ना बेकार में टेंशन लेते हो, ये आजकल के बच्चे हैं थोड़ा यहाँ-वहाँ घूम लेते हैं”- ऋचा ने लापरवाही से नैपकिन से अपने हाथ पोंछते हुए कहा।

“लेकिन मैंने उसे मोबाईल में घंटों किसी लड़के से बात करते हुए सुना है, वो उसका बॉयफ्रेंड है। मैंने उसे बहुत बार मना करने की कोशिश की लेकिन वह मेरी एक नहीं सुनती है और मुझसे बहुत बहस करती है।”

“अगर ऐसी बात है तो मैं उससे बात करती हूँ, उसे समझाना पड़ेगा अच्छी तरह से कि ये उम्र पढ़ाई की है ना कि इन सब चीजों में पड़ने की”- ऋचा ने लैपटॉप बैग में रखते-रखते आनंद प्रकाश की ओर देखते हुए कहा।

“देख बेटी मैं तुझे पुरानी बातें याद नहीं दिलाना चाहता लेकिन अगर तेरे कदम डगमगाए ना होते तो आज तेरी पर्सनल और प्रोफेशनल लाईफ कुछ और ही होती, ये छवि का बोझ भी तुझे नहीं ढोना पड़ता अकेले”- आनंद प्रकाश एक ही रौ में बोल उठे।

“पापा छवि मेरी बेटी है कोई बोझ नहीं”- ऋचा ने आनंद प्रकाश की इस बात से आहत हो कर कहा।

“ये बोझ नहीं तो क्या है ऋचा इसके पीछे तूने अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी, उस रोहन को देख, छवि उसकी भी तो बेटी है, लेकिन क्या कभी उसने तेरा या उसका हाल जानने की कोशिश की? वह तो अपनी जिंदगी में मस्त है। बेटी क्या मिला तुझे इसकी जिम्मेदारी ले कर। मैं तेरा बाप हूँ फिक्र होती है मुझे तेरी, मै तुझे क्या बनाना चाहता था और क्या से क्या हो गया। तेरे पास पूरी जिंदगी पड़ी है और इस लड़की की वजह से------” - आनंद प्रकाश गुस्से में बोलते ही जा रहे थे।

“पापा प्लीजजजजजजज!!! मैं हाथ जोड़ती हूँ आपके, छवि मेरी बेटी है कोई बोझ नहीं और ना ही मुझे फिर से कोई शादी-वादी करने में दिलचस्पी है, जिंदगी का क्या है वो कट ही रही है और कट ही जाएगी और रही बात छवि की लाइफ स्टाइल की तो मैं उससे बात करूँगी आज ऑफिस से आकर। ”- ऋचा ने अपना लैपटॉप का बैग और कार की चाबी उठायी और दरवाजे की तरफ बढ़ चली- और हाँ आज मेरी मीटिंग है तो मैं देर रात तक आउंगी, आप अपना और छवि का ध्यान रखिएगा” - ये कहकर ऋचा दरवाजा खोल कर बाहर निकल गयी।

****

ऋचा की मीटिंग काफी देर तक चली, उसे घर आते-आते रात के करीब साढ़ ग्यारह बज चुके थे। कार पार्क कर के वह लिफ्ट से अपने फ्लैट पर पहुँची वहाँ पड़ोसियों की भीड़ जमा थी जिसे देखकर किसी अनहोनी की आशंका से उसका दिल धड़क उठा। वह भीड़ को लगभग चीरती हुयी अंदर पहुँची, वहाँ ड्राइंगरूम में उसकी नजर सबसे पहले फर्श पर बैठे आनंद प्रकाश पर पड़ी जो

जोर-जोर से अपना सिर पकड़ कर रो रहे थे। उनको इस हाल में देख कर उसने उन्हें लगभग झिंझोड़ते हुए कहा- ‘‘क्या हुआ पापा’’

आनंद प्रकाश ने कुछ नहीं कहा, बस रोए ही जा रहे थे, तभी उसका ध्यान ड्राइंगरूम के सामने वाले कमरे में गया जो कि छवि का कमरा था, वहाँ छवि की लाश फंदे पर झूल रही थी। कमरे का दरवाजा टूटा हुआ था और वहां दो-तीन पुलिस कर्मी थे और एक फोटोग्राफर था जो कि छवि की लाश की हर एंगल से फोटो खींच रहा था।

‘‘छवि!!!! मेरी बच्ची ये क्या किया तूने’’- ऋचा दहाड़ मार कर रोते हुए छवि की लाश के पैरों से लिपट गयी।

‘‘मैडम-मैडम, प्लीज आप अलग हटिए’’ - महिला कांस्टेबल ने ऋचा को लाश से अलग किया। ऋचा की आँखों से आँसू नहीं रूक रहे थे। अपनी इकलौती बेटी को इस हाल में देखकर किस माँ का कलेजा फट नहीं पड़ेगा।

पुलिस के कांस्टेबलों ने लाश को नीचे उतारा फिर एंबुलेंस में लाश को ले जाया गया। थाना इंचार्ज रोहित ठाकुर, कसरती बदन का मालिक, गोरा और चेहरे पर मूँछे रखने वाला एक तीस वर्षीय तेज तर्रार पुलिस ऑफिसर था। उसे प्रथम दृष्टया में मामला आत्महत्या का ही लग रहा था। उसने अपनी पूछताछ षुरू की। आनंद प्रकाश से उसे यही जानकारी मिली की छवि का किसी लड़के से अफेयर था और हाल ही में उसका ब्रेकअप भी हुआ था, यह सब उन्हें इसलिए पता था क्योंकि उन्होंने उसकी फोन पर बातें सुनी थी जो वह दरवाजा बंद कर के करती थी। ऋचा तो उसे कोई जानकारी ही नहीं दे पायी। वह अपनी टीम के साथ पूछताछ के लिए छवि के स्कूल भी गया था वहाँ भी उसे यही जानकारी मिली की छवि पढ़ाई में कमजोर थी, और कई दिनों से बहुत गुमसुम भी रहती थी। उसकी एक खास सहेली से भी यही पता चला कि छवि का कोई बॉयफ्रेंड था जिससे वह स्कूल के बाद अक्सर मिलने जाया करती थी।

छवि के कमरे और पूरे घर की अच्छी से तलाशी ली गयी कि कहीं उसने कोई सुसाइड नोट तो नहीं छोड़ा लेकिन रोहित को कहीं से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। छवि कक्षा दस की छात्रा थी इसलिए ऋचा ने उसके काफी सब्जेक्टस की ट्यूशन्स लगा रखी थी। रोहित पूछताछ के लिए उसके कोचिंग भी गया लेकिन वहाँ भी पुलिस के हाथ खाली ही रहे। रोहित को छवि के रूम से घटना वाले दिन उसका मोबाइल भी मिला जो कि लॉक्ड था जिसे रोहित ने साइबर सैल जाँच के लिए भेज दिया था।

****

इधर छवि के जाने के बाद घर में अब आनंद प्रकाश और ऋचा ही रह गये थे। उनका चार लोगों का परिवार अब दो लोगों में ही सिमट कर रह गया था। इस घटना से आहत हो कर ऋचा ने खुद को घर में ही कैद कर लिया था। ना वो ठीक से खाती थी ना पीती थी और ना ही सोती थी। रात-रात को उठ कर वह रोती ही रहती थी। आनंद प्रकाश भी बेटी का ये हाल देख कर चैन से रह नहीं पा रहे थे, लेकिन वह कर भी क्या सकते थे, छवि बेटी थी ऋचा की। छवि को गये हुए अब दस दिन बीत चुके थे।

दिन के ग्यारह बज रहे थे तभी कालबेल बजी। आनंद प्रकाश और ऋचा अपने-अपने कमरो मे थे। आनंद प्रकाश ने उठ कर दरवाजा खोला। सामने रोहित खड़ा था।

“कहिए इंस्पेक्टर साहब कैसे आना हुआ”

“मैं अंदर आ सकता हूँ”

आनंद प्रकाश दरवाजे से हट कर रोहित के लिए अंदर आने का रास्ता दिया।

“ऋचा जी नहीं है क्या घर में?”- रोहित ने इधर उधर देखते हुए कहा।

“है, मैं अभी बुलाता हूँ उसे”- कहकर आनंद प्रकाश ऋचा के कमरे की तरफ पहुँचे, उन्होंने बंद दरवाजे पर दस्तक देते हुए ऋचा को रोहित के आने की खबर दी।

ऋचा आयी, सूरत से बहुत ही वीरान लग रही थी। आँखों के नीचे काले गड्डे पड़ गए थे। ऋचा और आनंद प्रकाश रोहित के सामने वाले सोफे पर बैठ गए।

“छवि की पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आ गयी है”- रोहित ने धीरे से कहा। इस पर आनंद प्रकाश और ऋचा ने उसकी ओर प्रश्नसूचक नजरों से देखा।

“ओपन एंड शट केस है छवि की मौत दम घुटने के कारण ही हुयी है। मोबाईल का लॉक खुलवा कर उसके कॉल डिटेल की आधार पर हमने उसके बॉयफ्रेंड का पता लगाया। उसका नाम अमन है, उन्नीस साल का है और इसी साल कॉलेज में एडमीशन लिया है और मालवीय नगर में रहता है। उस से भी पूछताछ की तो पता लगा वो दोनों पिछले एक महीने से रिलेशन में थे और उनकी जान पहचान सोशल मीडिया पर ही हुयी थी। वह ज्यादा कुछ उसके बारे में नहीं जानता है। उन दोनों का किसी बात पर झगड़ा हो गया था जिस वजह से छवि ने ही उससे ब्रेक अप कर लिया था। उसने तो उसे मनाने की बहुत कोषिश की लेकिन वह नहीं मानी और उसे फोन पर और हर सोशल मीडिया पलैटफार्म पर ब्लाक कर दिया था। और यह ब्रेक अप छवि की मौत के चार दिन पहले ही हआ था। लड़का सच बोलता हुआ जान पड़ रहा था, मैंने उसका बैकग्राउंड चैक किया है, उसके माँ-बाप वहीं घर से ही रेडीमेड कपड़ो की दुकान चलाते हैं, शरीफ लोग हैं और लड़का भी पढ़ने-लिखने वाला ही है।”

आनंद प्रकाश और ऋचा चुपचाप सिर झुका कर रोहित की बात सुन रहे थे।

“एक बात और जो चैंकाने वाली रिपोर्ट में सामने आयी है वह ये है कि छवि सेक्सुअली एक्टिव थी। और वह दो महीने की प्रेग्नेंट भी पायी गयी है।”

यह बात सुनकर ऋचा और आनंद प्रकाश दोनों के ही पैरों तले से जमीन खिसक गयी थी।

“आपको कोई गलतफहमी हुयी है इंस्पेक्टर साहब मेरी लड़की प्रेग्नेंट नहीं हो सकती। रिपोर्ट में कुछ गलती हुयी होगी”- ऋचा ने रोहित की ओर देखते हुए कहा।

आनंद प्रकाश ने ऋचा के कंधे पर हाथ दे कर उसे सांत्वना दी।

“पापा ये क्या बोल रहे हैं, छवि और प्रेग्नेंट?????अरे वो तो बच्ची है”- ऋचा ने आनंद प्रकाश की ओर आँसूओं से भरी निगाहों से देखते हुए कहा, वह अपना सिर थाम कर बैठ गयी।

“इंस्पेक्टर आपको कोई गलतफहमी हुयी है।”- आनंद प्रकाश बोल पड़े।

“देखिए पोस्टमार्टम से जो पता चला वह मैंने आपको बताया, छवि रिलेशन में एक महीने पहले से थी जबकि प्रेग्नेंट वो दो महीने से है। इसका मतलब छवि का किसी और से भी संबंध था, लेकिन कॉल रिकार्ड या उसके सोशल मीडिया से कुछ पता नहीं लग पाया है कि आखिर छवि के बच्चे का बाप था कौन, यह केस अब हमें बंद करना ही होगा।”- यह कहकर रोहित वहाँ से निकल गया।

रोहित ने आस-पड़ोस में भी पूछताछ की मगर कुछ पता नहीं लग सका। सब ने आनंद प्रकाश और उसके परिवार की तारीफ ही की। धीरे-धीरे दो महीने गुजर गया। छवि के अजन्में बच्चे का बाप कौन था यह रहस्य अनसुलझा ही रह गया। रोहित भी केस क्लोज कर दूसरे केस में लग गया। ऋचा अब भी

नार्मल नहीं हुयी थी, ऑफिस वह जाती नहीं थी बस अपने कमरे में अकेले पड़े रहती थी, खाली-खाली आँखों से बस शून्य को निहारा करती थी। आनंद प्रकाश ही बेटी का सहारा बने हुए थे। पूरा घर इस दुःख और संकट की घड़ी में उन्होंने ही संभाला हुआ था, बेटी के भविष्य के लिए वह भी बहुत फिक्रमंद थे। आनंद प्रकाश ने छवि के पिता रोहन को भी छवि की आत्महत्या की खबर दी थी, लेकिन उसे इस खबर से कुछ फर्क नहीं पड़ा। वह तलाक के तुरंत बाद ही दूसरी शादी कर के अपनी नयी गृहस्थी जमा चुका था।

****

शाम का वक्त था, ऋचा अपने फ्लैट के टैरेस पर बैठी हुयी थी, सामने एक माँ-बेटी पानीपूरी के स्टाल पर खड़े हो कर पानीपूरी खा रहीं थी। बेटी की उम्र छवि जितनी ही थी। उन दोनों को इस तरह देखकर ऋचा की आँखें बरस पड़ी। वह उन दोनों को देख कर रोने लगी। आनंद प्रकाश किचन में शाम की चाय बना रहे थे। वह चाय ले कर टैरेस पर गए, उन्होंने देखा की ऋचा रो रही है, तभी उनका ध्यान नीचे गया तो वही माँ-बेटी उन्हें पानीपूरी के स्टाल पर दिखीं वह समझ गए कि उनकी बेटी के रोने का क्या कारण था। उन्होंने चाय टेबल पर रखी और ऋचा के कंधे पर हाथ रखा, पिता का वात्सल्य भरा स्पर्श पाकर ऋचा खुद को संभाल नहीं पायी और आनंद प्रकाश से लिपट कर रोने लगी।

"पापा, ऋचा बच्ची थी किस दरिंदे की हवस का षिकार बनी मेरी बेटी, ये सब क्या हो गया पापा। इतनी सी उम्र में मेरी बेटी इस दुनिया को छोड़कर चली गयी।"

आनंद प्रकाश ऋचा के सिर पर हाथ फेरते हुए उसे चुप कराने लगे। मन ही मन आनंद प्रकाश ठान चुके थे कि वह अपनी लाडली बेटी को यूँ तिल-तिल करते हुए मरता नहीं देख सकते। पहले ही किशोरावस्था की एक नादानी उसकी

जिंदगी बरबाद कर चुकी थी अब उसकी आगे की जिंदगी बरबाद ना हो इसके लिए उन्हें ही कुछ करना होगा।

इंस्पेक्टर रोहित पुलिस स्टेशन में बैठा हुआ दूसरे केस की फाइल देख रहा था कि तभी उसका मोबाईल बज उठा। उसने कॉल रिसीव की।

“हैलो”

“हैलो!! आप इंस्पेक्टर रोहित बोल रहे हैं”- कॉल करने वाले ने पूछा।

“मैं इंस्पेक्टर रोहित ही बोल रहा हूँ, आप कौन बोल रहे हैं”

“छवि की आत्महत्या का केस आप ही देख रहे थे ना???”

“हाँ”

“आप जानना नहीं चाहेंगे कि छवि ने आत्महत्या क्यों की और उसके अजन्में बच्चे का बाप कौन है”

“पर तुम बोल कौन रहे हो”

“मेरे बारे में जानने से ज्यादा महत्वपूर्ण काम आपका यह जानना है कि क्या बात थी कि छवि ने अपनी जान खुद ले ली”

“साफ-साफ बताओ कि कहना क्या चाहते हो”

“आपके हर सवाल का जवाब उत्तर प्रदेश के जौनपुर कस्बे की गली न0 2, मकान नं0 4 में मौजूद है।”

“लेकिन मैं कैसे मान लूँ कि तुम जो कह रहे हो वो सच है”

रोहित की बात अभी पूरी भी नहीं हुयी थी कि फोन करने वाले ने फोन काट दिया।

रोहित असमंजस में पड़ गया कि उसे फिर से इस कॉलर की बात में आकर छवि के केस की तफ्तीश शुरू करनी चाहिए या नहीं????

खैर, रोहित ने तय किया की वह इस मिली हुयी टिप पर जा कर देखेगा कि बात क्या है।

अगले ही दिन ऑफिस से छुट्टी ले कर रोहित उस कॉलर के बताए पते पर सादे कपडों में जा पहुँचा। वह किसी गिरधारी लाल का मकान था। कस्बे के बाकी मकानों से उस मकान की स्थिति काफी अच्छी थी। बाहर से उस मकान में टाईल्स लगे हुए थे जो कि देखने से ही मंहगे लग रहे थे और घर में एक नयी चमचमाती कार भी खड़ी थी।

रोहित ने मकान में जाने से पहले आस-पास से उस मकान में रहने वालों के बारे में जानकारी जुटाने का निर्णय लिया। इधर उधर देखने पर उसे एक चाय की दुकान दिखी। वहाँ की मालकिन एक औरत थी। रोहित ने उसे बताया कि वह इस कस्बे में किराए पर मकान लेना चाहता है तो उस औरत ने उसे हर घर की डिटेल देनी शुरू कर दी। जब उस औरत ने मकान नं0 4 के बारे में बताया तो रोहित को लगा कि छवि को न्याय मिलने का रास्ता बन सकता है। वह मकान गिरधारी लाल का था।

रात के करीब आठ बजे थे जब रोहित ने लोकल थाने के दो कांस्टेबल के साथ गिरधारी लाल के घर पर दबिश दी। बेल बजाने पर घर का गेट एक 20 वर्षीय लड़के ने खोला, जिसने सफेद रंग की कमीज और सफेद रंग की पैंट पहनी हुयी थी उसने अपना परिचय गिरधारी लाल के लड़के के रूप में दिया। गिरघारी उस समय घर पर अपने नए, एक मंहगी कंपनी के बड़े टी0वी0 पर आराम से सोफे पर बैठा फिल्म देख रहा था।

''कौन है शूरवीर''- गिरधारी ने टी0वी0 से बिना आँखें हटाए पूछा।

“पुलिस”- कमरे में घुस कर रोहित ने उसकी बात का उत्तर दिया।

पुलिस को अपने सामने खड़ा देख कर गिरधारी लाल उठ कर भागने को हुआ लेकिन कामयाब ना हो सका। रोहित उसको पूछ-ताछ के लिए गिरफ्तार कर थाने ले कर आया।

रोहित ने उसकी पूछ-ताछ षुरू की ।

“तू करता क्या है”

“मैं एक ड्राईवर हूँ साहब”

”किसके यहाँ?”

“डाक्टर राजेन्द्र शर्मा के यहाँ”

“तनख्वाह कितनी है तेरी”

“दस हजार हुजूर”

“और इस दस हजार में तू इतने ठाठ-बाट से जी रहा है, हमें टिप मिली है कि तू शहर में ड्रग्स का घंधा करता है”

“नहीं साहब!!! मैं एक ड्राईवर हूँ मैं कोई गलत काम नहीं करता माई-बाप” - कहते हुए गिरधारी ने रोहित के पैर पकड़ लिए।

“तो फिर बता कि दो महीने में तेरे पास, यानि कि एक मामूली ड्राईवर के पास इतने रूपये कहाँ से आये कि तेरे तो दिन ही बदल गए।”

“माई-बाप मेरी एक लाटरी लगी थी उसी, से यह ठाठ-बाट है”

“अच्छा लाटरी लगी थी!!!! लगता है ये ऐसे नहीं मानेगा, तुम अपने तरीके से इससे उगलवाओ”- रोहित ने पास खड़े कांस्टेबल की ओर देख कर कहा और उठ कर वहाँ से चला गया।

लंबे चौड़े कांस्टेबल के हाथ में मोटा सा डंडा था जिससे उसने गिरधारी लाल को अभी दो ही डंडे लगाए होंगे कि उसकी चीखें सारे थानें में गूँजने लगीं। रोहित जानता था कि गिरधारी अपना मुँह जरूर खोलेगा, पुलिस की मार के आगे अच्छे-अच्छे अपराधी घुटने टेक देते हैं और गिरधारी कोई पेशेवर अपराधी तो था नही जो पुलिस की मार सह जाता।

“सर, गिरधारी लाल सब बताने को तैयार है”- थोड़ी देर बाद कांस्टेबल ने रोहित को आ कर बताया।

रोहित सेल में पहुँचा तो गिरधारी रोते हुए उसके कदमों में गिर पड़ा।

“इंस्पेक्टर साहब मुझे मत मारिए मैं सब बताने को तैयार हूँ”

“चल जल्दी बताना शुरू कर कि अगर तू ड्रग्स नहीं बेचता तो तुझ मामूली डॉक्टर के ड्राईवर के पास कहाँ से आए इतने पैसे।”

गिरधारी लाल ने रोहित को जब सच्चाई बतानी शुरू की तब छवि के आत्महत्या की गुत्थी धीरे-धीरे सुलझनी शुरू हुयी।

****

इतने दिनों से मरघट के जैसे फैले सन्नाटे वाले, ऋचा के फ्लैट में सुबह से थोड़ी चहल-पहल थी। आनंद प्रकाश ने ऋचा के लिए एक लड़का देखा था जो कि उनके दोस्त का बेटा था, लड़का हाई कोर्ट में वकील था और प्रेक्टिस करता था। उन लोगों को आनंद प्रकाश ने ऋचा, रोहन और छवि के बारे में सब बता दिया था और ये सब सुन कर लड़के और उसके परिवार वालों को ऋचा के

अतीत से कोई दिक्कत नहीं थी। वे लोग सादे समारोह में शादी करने के लिए तैयार थे। आज ऋचा की शादी थी मंदिर में। आनंद प्रकाश के कुछ करीबी रिश्तेदार इस शादी में शामिल होने के लिए आए हुए थे, ऋचा ने लाल रंग की साड़ी, कुछ गहने और हल्का मेक अप किया हुआ था। सब लोग मंदिर के लिए निकलने ही वाले थे कि तभी फ्लैट की डोरबेल बजी। दरवाजा खुलते ही सामने रोहित और उसकी टीम खड़ी थी।

"कहाँ की तैयारी हो रही है???"- रोहित ने अंदर प्रवेश करने पर पूछा, उसके साथ दो कांस्टेबल और अंदर आ गये।

"आज ऋचा की शादी है तो हम सब मंदिर के लिए ही निकल रहे थे"- आनंद प्रकाश ने बताया। इधर पुलिस को देखकर शादी वाले घर में असहजता का वातावरण बन गया था। जो सात-आठ रिश्तेदार थे वे सब आपस में काना-फूसी करने लगे कि "ये पुलिस का अब क्या काम"???

ऋचा और आनंद प्रकाश भी असमंजस मे थे कि रोहित इस समय क्यों आया है??

"ऋचा जी आप जानना नहीं चाहेंगी कि ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ बन गयी थीं या बना दी गयीं थी कि छवि को आत्महत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ा"- रोहित ऋचा की ओर देखकर बोला।

"इंस्पेक्टर साहब पहेलियाँ मत बुझाइए और साफ-साफ बताइए कि कुछ पता चला है क्या"- ऋचा उतावली सी हो कर बोली।

"कुछ नहीं बहुत कुछ पता चला है कि एक मासूम सी बच्ची को क्या-क्या झेलना पड़ा, वो किसी की सड़ी हुयी विकृत मानसिकता का शिकार हुयी है।"

“इनकी”- रोहित ने आनंद प्रकाश की ओर उंगली की जो मौका पाकर फ्लैट से खिसकने की कोशिश में थे और जिन्हें दोनों कांस्टेबलों ने पकड़ लिया था।

“क्या बकते हो, मैं कुछ समझी नहीं”- ऋचा ने गुस्से से आनंद प्रकाश और फिर रोहित की ओर देख कर कहा।

“सब बताता हूँ, छवि के अजन्में बच्चे का बाप और कोई नहीं ये घिनौना आदमी जो आपका पिता और समाज में एक सम्मानित शिक्षक के रूप में जाना जाने वाला, आनंद प्रकाश है”

“क्या”- ऋचा को रोहित की बात का भरोसा नही हुआ।

“ये आदमी झूठ बोल कर मुझे फँसा रहा है बेटी मैंने कुछ नहीं किया है”- आनंद प्रकाश ने रूआंसी सी आवाज में अपना बचाव किया।

“मैं फंसा रहा हूँ तुझे कमीने, मैं, बोल तू छवि के साथ बलात्कार किया करता था आज से नहीं तब से जब वह महज चार साल की थी तब से, बोल कमीने बोल कि तू उसके अकेले तेरे साथ फ्लैट में होने का नाजायज फायदा उठाता था, उसे मारता था पीटता था अपना गुस्सा उस मासूम पर उसका बलात्कार कर के निकालता था। इसी वजह से उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था, इसी वजह से वह घंटों अपने ही घर से बाहर रहती थी, इसी वजह से वह चिड़चिड़ी हो गयी थी।”- रोहित ने आनंद प्रकाश का कॉलर पकड़ कर उसे चार-पाँच लगातार थप्पड़ लगा कर कहा।

“छोड़ो मेरे पापा को, ये निर्दोष हैं इन्होंने कुछ नहीं किया, आप के पास क्या सबूत है कि मेरे पापा ही.......”- ऋचा ने आनंद प्रकाश और रोहित के बीच में आते हुए अपना वाक्य अधूरा छोड़ते हुए कहा।

“सबूत ये है”- तभी नाटकीय ढंग से दो और कांस्टेबल एक दुबले-पतले से लगभग पचास वर्षीय आदमी को लेकर फ्लैट में घुसे। जब आनंद प्रकाश और उस आदमी की नजरें आपस में मिली तब आनंद प्रकाश के चेहरे का रंग ही बदल गया। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। वह कांस्टेबलों की पकड़ से भागने की कोशिश करने लगा। तभी रोहित ने फुर्ती दिखाते हुए सेंटर टेबल पर रखा हुआ गुलदस्ता उठा कर आनंद प्रकाश की ओर दे मारा जो उसके सिर पर लगा और वह सिर पकड़कर बैठ गया। उसके सिर से खून का फव्वारा फूट पड़ा।

ऋचा और बाकी लोगों की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ये सब आखिर हो क्या रहा है। किसी को यकीन नहीं आ रहा था कि आनंद प्रकाश इतना घिनौना काम कर सकता है।

“ऋचा जी ये आदमी डा0 राजेन्द्र शर्मा है जो सरकारी अस्पताल में पोस्टमार्टम किया करता है और डॉक्टर होने के साथ ही ये हरामजादा एक ब्लैकमेलर भी है, बता सबको सच्चाई क्या है” - रोहित ने राजेन्द्र शर्मा का कालर पकड़ कर उसे भी मारने के लिए हाथ उठाया।

“बताता हूँ, बताता हूँ,”- राजेन्द्र रोहित की ओर देख कर घबरा कर बोला।

“जब मैं छवि की लाश का पोस्टमार्टम कर रहा था तो उसके गुप्तांग से एक छोटी सी पॉलिथीन शीट के अंदर एक कागज का टुकड़ा मिला था जिस पर एक लॉकर नं0 लिखा हुआ था। मैंने छानबीन की तो वह लॉकर नंबर एक लाइब्रेरी का था। मैंने उस लाइब्रेरी का पता लगाया और वहाँ के लाइब्रेरियन को थोड़े पैसे देकर उस लॉकर को खोला, वह लॉकर छवि का था। उस लॉकर में उसके किताबों के साथ उसकी एक पुरानी सी ड्राइंग बुक भी थी, जिसके पहले पन्ने पर अंग्रेजी में लिखा था, “लुक मम्मा व्हाट यूअर फेवरिट मैन डू विद मी, ही कॉल्स मी होर इन युअर एबसेन्स, आई टोलरेटेड एवरीथिंग, बट

नॉट एनीमोर” (देखो मम्मी आपके पंसदीदा आदमी मेरे साथ क्या क्या करते हैं, वह मुझे एक गन्दी गाली दे कर बुलाते हैं आपकी अनुपस्थिति में, मैंने सब सहा, लेकिन अब और नहीं) उस ड्राइंग बुक को जब मैंने खोला तो देखा उसमें छवि ने अपने साथ हो रहे घृणित यौन अपराधों को तस्वीरों के माध्यम से बयां किया था, मैंने तुरंत वह ड्राइंग बुक अपने कब्जे में ले ली और आनंद प्रकाश को कांटेक्ट किया और उसे ब्लैक मेल करने लगा और उससे मैंने उसकी करतूत पुलिस को ना बताने के लिए तीस लाख रूपये लिए। ये बात किसी तरह मेरे ड्राईवर गिरधारी लाल को पता लग गयी तो वह मुझे ब्लैकमेल करने लगा, उसका मुँह बंद रखने के लिए मैंने उसे भी दस लाख रूपये दिये।”- राजेन्द्र शर्मा ने रहस्योद्घाटन किया।

रोहित ने पॉलिथीन शीट में रैप वो ड्रांइग बुक ऋचा की ओर बढ़ायी। कांपते हुए हाथों से ऋचा ने वह ड्राइंग बुक पकड़ी। उस बुक का उसने पहला पन्ना खोला तो उसमें लिखा हुआ था “लुक मम्मा व्हाट यूअर फेवरिट मैन डू विद मी, ही कॉल्स मी होर इन युअर एबसेन्स, आई टोलरेटेड एवरीथिंग, बट नॉट एनीमोर”, वह छवि की हैंडराइटिंग थी। उसने धड़कते दिल से पन्ना पलटा तो एक घृणित तस्वीर सामने आयी जिसे देखकर ऋचा को उबकाई सी आने लगी। ऐसी तस्वीरों से पूरी ड्राइंगबुक भरी पड़ी थी। एक-एक पन्ना पलटते हुए ऋचा का सिर चकराने लगा। क्रोध और घृणा से उसका चेहरा लाल होने लगा। वह गुस्से से आनंद प्रकाश की ओर बढ़ी और एक झन्नाटेदार थप्पड़ उसके गाल पर रसीद किया, और उसके मुँह पर थूक दिया। उसकी इस हरकत से रोहित के साथ-साथ सारे मौजूद लोग सन्न रह गये। किसी को ऋचा से ऐसी किसी हरकत की उम्मीद नहीं थी।

“बेटी थी वो मेरी, बेटी, आनंद प्रकाश तेरा ही खून थी वो, तू इतना नीच कैसे हो सकता है कि इतनी छोटी सी बच्ची का बलात्कार किया तूने, अपनी ही

नातिन के पेट में अपने पाप की निशानी डाली, नरपिशाच है, तू नरपिशाच कमीने, बाप के नाम पर कलंक है तू"- ऋचा आनंद प्रकाश का गिरेबान पकड़कर जोर-जोर से झिंझोड़ते हुए कहा।

"मेरा खून???? मेरा खून नहीं थी वो तेरे पाप की निशानी थी। मैं तुझे पढ़ा लिखा कर डॉक्टर या अपने बाबूजी की तरह वकील बनाना चाहता था और तू, तू क्या बनी एक बिन ब्याही माँ, एक कलंक अपने साथ ले आयी, उस पाप की वजह से तेरी, मेरी, आनंद प्रकाश, मास्टर आनंद प्रकाश जिसके पढ़ाए हुए बच्चे सरकारी और प्राइवेट नौकरियों में ऊँची-ऊँची पोस्ट पर हैं, उसकी खुद की बेटी की जिंदगी बरबाद हो गयी, किस वजह से? इस छवि की वजह से। हाँ-हाँ-हाँ नफरत करता था मैं छवि से। मारना चाहता था मैं उसे तिल-तिल कर के। मैंने जो किया ठीक किया, उसे सजा दी मैंने पैदा होने की। साली होर"- अपनी शर्ट की बाजू से अपने चेहरे पर से ऋचा की थूक साफ़ करते-करते आनंद प्रकाश उत्तेजनावश यह सब कह गया और फिर पागलों की तरह एका एक जोर जोर से हंसने लगा।

आनंद प्रकाश की बात सुनकर ऋचा का सिर चकराने लगा। उसे याद आने लगा किस तरह नन्ही छवि जब वह ऑफिस या टूर के लिए जाती थी तो उसका आँचल पकड़ कर कहती थी, "मम्मा मैं भी आपके साथ चलूँगी आई डोंट वांट टू स्टे विद नानू, वो गंदे हैं वो मुझे मारते हैं" लेकिन वह हमेशा छवि को समझा देती कि नानू अच्छे हैं और उसे उन्हीं के साथ रहना है। अगर उसने छवि की बातों पर ध्यान दिया होता तो आज छवि जिंदा होती और उसके साथ वो सब कभी ना होता जो हुआ।

"इंस्पेक्टर साहब ले जाइए इस कमीने को यहाँ से मैं इसकी कभी सूरत भी नहीं देखना चाहती"- ऋचा ने हिकारत भरी नजरों से आनंद प्रकाश की ओर देखते हुए कहा। आनंद प्रकाश के चेहरे पर पछतावे के भाव बिल्कुल भी नहीं थे।

पुलिस आनंद प्रकाश और डा0राजेन्द्र शर्मा को गिरफ्तार कर के ले गयी। आनंद प्रकाश पर अपनी नाबालिग नातिन के यौन शोषण और आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा चला और उसे बीस साल कैद की सजा मिली, डा0राजेन्द्र शर्मा को साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ का दोषी मानते हुए चार साल कैद की सजा मिली । और मेडिकल बोर्ड ने उसका लाइसेंस भी रद्द कर दिया। गिरधारी लाल को भी साक्ष्य छिपाने और आपराधिक षड़यंत्र में साथ देने के मामले में दो साल कैद की सजा सुनायी गयी।

ऋचा ने करोल बाग का अपना फ्लैट बेच दिया, वह उन कड़वी यादों के बीच नहीं रहना चाहती थी। कहीं ना कहीं वह खुद को ही छवि की मौत का जिम्मेदार मानती थी, उसे लगने लगा था कि वह अच्छी माँ बन ही नहीं पायी कभी। वह कैरियर में इतना उलझ गयी थी कि छवि को अपने माँ-बाप के हवाले कर अपनी जिम्मेदारी से उसने अपना पल्ला लगभग झाड़ ही लिया था। आनंद प्रकाश के दोस्त का बेटा जिससे ऋचा की शादी तय हुयी थी वह अब भी ऋचा को अपनाने को तैयार था। उसका नाम अभिनव था। आनंद प्रकाश के जेल जाने के बाद उसने ऋचा को भावनात्मक रूप से बहुत सहारा दिया। थोड़े समय के बाद ऋचा और अभिनव ने शादी कर ली। शादी में इंस्पेक्टर रोहित को भी आमंत्रित किया गया था।

इंस्पेक्टर रोहित के अनुसार अगर उसे उस दिन उस अज्ञात कॉलर का फोन ना आया होता तो छवि के आत्महत्या की गुत्थी कभी सुलझ ही ना पाती और आनंद प्रकाश जैसा हैवान कभी ना पकड़ा जाता। उसने उस कॉलर के बारे में ऋचा से भी जिक्र किया, लेकिन ऋचा को ऐसे किसी कॉलर की कोई जानकारी नहीं थी। रोहित ने पता लगाने की बहुत कोशिश की पर उस कॉलर का कभी पता लग ही नहीं पाया।

चांदनी रात थी और सन्नाटा फैला हुआ था, इधर जौनपुर कस्बे की गली न0 2, मकान नं0 4 में, एक युवती ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी श्रृंगार कर रही होती है। उसने शादी का लाल रंग का जोड़ा, गले में मंगलसूत्र और दुल्हन का संपूर्ण श्रृंगार किया होता है। वह आइने में खुद को निहारती है और मुस्कुराती है। वह युवती दुल्हन के लिबास में बेहद खुबसूरत लग रही थी। वह ड्रेसिंग टेबल के सामने से हट कर उस कमरे में अपनी अलमारी के पास जाती है, उसके अंदर कपड़ों के बीच से एक मिट्टी की गुल्लक निकालती है, उसे जमीन पर रखकर हथौड़े की मदद से तोड़ती है। उसके अंदर से नोट की जगह कागज के कुछ टुकड़े निकलते हैं, वह उन टुकड़ों को समेटती है और दो घंटे की मेहनत के बाद उन टुकड़ों को जोड़कर एक तस्वीर बनाती है। वह तस्वीर एक युवक की होती है।

जिसे देखकर उस खूबसुरत युवती की आँखों से आँसू की एक बूँद निकल कर उस तस्वीर पर गिरती है। उस तस्वीर को अपने सीने से लगाकर वह जमीन पर लेट जाती है और मर्दाने स्वर में बुदबुदाती है “मैंने तुम्हारा बदला ले लिया सुनील, मैंने तुम्हारा बदला ले लिया”। यह कहकर वह जोर-जोर से रोने लगती है। वह युवती कोई और नहीं गिरधारी लाल का बेटा शूरवीर था।

शूरवीर चार बहनों का इकलौता छोटा भाई था, बचपन में बहनें उसे सजा कर रखती थीं लड़की की तरह, उसका मेक अप करती थीं जिसके कारण उसे लड़कियों की तरह रहना अच्छा लगने लगा। बढ़ते शूरवीर की चाल ढ़ाल सब लड़कियों की तरह होने लग गयी। उसे मर्द पसंद आने लगे। गाँव में सब उसे हिजड़ा या छक्का कह कर बुलाते थे। यहाँ तक कि उसका बाप गिरधारी लाल भी उसे बहुत मारता था, और उसे मर्द बनने की सलाह देता था। लेकिन शूरवीर का शरीर तो मर्द का था लेकिन आत्मा औरत की थी। पूरे गाँव में, उसके स्कूल में सब उसे बहुत चिढ़ाते थे लेकिन उसके गाँव का एक लड़का सुनील जो

स्कूल में उससे एक क्लास सीनियर था, वही उसका मजाक नहीं बनाता था। उससे बहुत प्यार से बात करता था। धीरे-धीरे शूरवीर सुनील की तरफ आकर्षित होने लगा। एक दिन हिम्मत कर के उसने सुनील को अपने दिल का हाल सुनाया। सुनील को भी कहीं ना कहीं शूरवीर पसंद था। दोनों का प्यार परवान चढ़ने लगा। दोनों ने मंदिर में जा कर शादी कर ली। शूरवीर दुल्हन के भेश में था और सुनील दूल्हे के। सुनील ने शूरवीर की मांग भरी उसे मंगलसूत्र भी पहनाया। तभी इस शादी की भनक गाँव वालों को पड़ गयी। गिरधारी लाल, उसके बड़े भाई और उसके बेटे ने सुनील और शूरवीर को बहुत मारा। सुनील उनकी मार सह नहीं पाया और उसने मौके पर ही दम तोड़ दिया। इधर शूरवीर सुनील की मौत के बाद कई महीनों तक डिप्रेस रहा। उसकी बहनें उसका दुःख समझती थीं लेकिन वह सब कर भी क्या सकती थीं, वे सब भी गिरधारी के गुस्से के आगे बेबस थीं।

एक दिन शूरवीर को अपने पिता गिरधारी लाल, आनंद प्रकाश और डा0राजेन्द्र शर्मा के कारनामों का पता चला। बस उसने उसी दिन ठान लिया था कि उसे सुनील की मौत का बदला किस प्रकार से लेना है। वह छवि के केस की डिटेल्स को फौलो करने लगा। उसने कहीं से इंस्पेक्टर रोहित का नंबर जुगाड़ किया और उसे गिरघारी लाल के बारे में टिप दी। ये अज्ञात कॉलर शूरवीर ही था जिसने अपने बाप को सलाखों के पीछे पहुँचा कर अपने पति सुनील की मौत का बदला लिया और मासूम छवि को इन्साफ दिलवाने में मदद की।

समाप्त

किडनैपर

1

तेरह एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ, दिल्ली का कश्मीरी गेट बस अड्डा अथवा आई0एस0बी0टी, भारत के सबसे पुराने एवम् सबसे बड़े अंतर्राज्यीय बस अड्डों में से एक है। यहाँ से बस सेवा दिल्ली और सात अन्य राज्यों – उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के बीच चलती है। एक दिन में यहां से 1800 से अधिक बसें चलती है। उस समय सुबह के ग्यारह बजे थे। रोज की तरह वहां यात्री बस पर चढ़ रहे थे या उतर रहे थे। कुछ वहां बैठ कर बस का इंतजार कर रहे थे।

तभी वहां दो युवकों के साथ एक युवती आयी। बला की खूबसूरत, फैशनेबल, कमर से नीचे तक लहराते लंबे काले बाल, पाँच फुट चार इंच, गुलाबी रंगत, बिल्कुल किसी बॉलीवुड फिल्म की हीरोईन की तरह दिखने वाली, वन पीस ड्रेस पहने इक्कीस वर्षीय उस युवती का नाम भावना था। वह एक प्रसिद्ध सोशल मीडिया इन्फलुएंसर थी, उसके “वाई-ट्यूब” पर लाखों सब्सक्राइबर थे साथ ही उसके “ग्रामइन” पर भी दो मिलियन फालोवरस थे। वह वैलेंटाइन्स

डे के अवसर पर अपनी टीम, जिसमें की उसी की उम्र के दो युवा लड़के- जतिन एवं राहुल थे, उनके साथ वह अपनी एक नयी वीडियो, बनाने के उद्देश्य से बस अड्डे गयी थी।

पीली टी-शर्ट और नीली जींस पहने जतिन कैमरा और ट्राईपोड निकाल कर शूटिंग के लिये सेट करने लगा।

राहुल, भावना का मेकअप मैन था जिसने एक काला बरमूडा और लाल शर्ट पहना था। उसने अपने बैग से एक शीशा निकालकर भावना को दिया जिसमें भावना खुद का हुलिया देख रही थी और उसे टचअप की जरूरत थी।

राहुल ने हेयर ब्रश निकाला और भावना के बाल सेट करने लगा उसके बाद उसका मेकअप। बस अड्डे पर मौजूद लोग कौतुहल से उन तीनों के कार्य कलापों को देख रहे थे। भावना अपना मेकअप करवा कर शूट के लिये रेडी हो गयी। उसे रेडी देख कर जतिन ने जिस बैग में कैमरा था उसी बैग से एक स्पीकर बाहर निकाला और म्यूजिक प्ले किया। म्यूजिक बजते ही भावना थिरकने लगी और जतिन कैमरे से उसकी रिकार्डिंग करने लगा।

"कट इट यार"- भावना ने स्पीकर बंद करते हुए और अपना डांस रोकते हुए कहा।

"क्यों, क्या हुआ" - जतिन ने कैमरे से बाहर झांकते हुए कहा।

"फील नहीं आ रहा यहाँ बस स्टैंड पर"

"अरे! मैम पर आपने ही तो कहा था कि हम बस स्टैंड पर जा कर अपना अगला वीडियो शूट करेंगे।" - राहुल ने आश्चर्य से भावना की ओर देखते हुए कहा।

“या! आई नो, यहाँ शूट करने का मेरा ही आइडिया था बट आई एम नॉट गेटिंग ए राईट वाइब हेयर”

“तो क्या करें वापस चलें स्टूडियो”- जतिन ने राहुल और भावना की तरफ देखते हुए कहा।

भावना का एक हाई-टेक स्टूडियो उसके घर पर था। वह लाजपत नगर के क्षेत्र में अपने माता-पिता के साथ रहा करती थी। अपने घर के एक हिस्से में उसने अपना स्टूडियो और ऑफिस बना रखा था जहाँ वह अपने काम के साथ-साथ बिजनेस के सिलसिले में लोगों से भी मिला करती थी।

“नहीं वापस जाने की जरूरत नहीं है, सोचते हैं कुछ नया, आज वैलेंटाइन्स डे पर अपना वीडियो तो अपलोड करना ही है”- भावना ने यहां-वहां बस अड्डे पर नजर घुमाते हुए कहा।

“क्यों ना आज का वीडियो हम मेट्रो में शूट करें”- राहुल ने भावना की ओर देखते हुए कहा।

“हाँ यह सही रहेगा, आजकल मेट्रो में वीडियो बनाना बहुत ट्रेंड कर रहा है”- जतिन ने भी भावना की ओर देखते हुए कहा।

“यस गाइज और मेरा कोई वीडियो है भी नहीं मेट्रो में, तो चलो मेट्रो स्टेशन चलते हैं, वहां से मेट्रो ले लेंगे स्टूडियो तक का और उसी में वीडियो भी बना लेंगे”- भावना जतिन और राहुल का सुझाव सुन कर उत्साहित होते हुए बोली।

भावना की सहमति पाते ही वह तीनों मेट्रो स्टेशन की तरफ चल पड़े जो कि बस अड्डे के बिल्कुल बगल मे ही था। वहाँ उन्होंने काउंटर पर जाकर लाजपत नगर की तीन टिकट ली और मेट्रो का इंतजार करने लगे। थोड़ी देर बाद मेट्रो

आई वह तीनों उस पर सवार हो गए। मेट्रो में सवार होने के बाद उन लोगों ने कैमरा, ट्राईपोड इत्यादि का सेट अप रेडी किया और शूट की तैयारी करने लगे।

मेट्रो के जिस डिब्बे में भावना वीडियो बनाने के लिए चढ़ी थी उस डिब्बे की कुछ सवारियां कौतूहल वश भावना और उसकी टीम का कार्य-कलाप देख रहीं थीं और कुछ अपने फोन में व्यस्त थीं।

कुछ जवान लडके-लड़कियां जो उसे पहचानते थे अपने मोबाइल से उसका वीडियो बनाने लगे। दो-चार लड़के तो जतिन के पीछे खड़े हो कर कैमरे में झांकने की कोशिश करने लगे।

"बंद करो यह सब" - भावना को अपने पीछे से एक कठोर आवाज सुनायी दी।

"सुनायी नहीं दिया, बंद करो यह म्यूजिक और अपना कैमरा" उस आवाज ने जतिन की तरफ बढ़ते हुए कहा।

वह एक पुलिस का सिपाही था। मेट्रो रेल में बढ़ रही अश्लील हरकतों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली सरकार ने मेट्रों में पुलिस की तैनाती कर दी थी।

उसने स्पीकर का बटन ऑफ़ कर दिया।

"क्या हुआ सर?" भावना ने स्पीकर ऑफ़ होते देख आश्चर्य से पूछा।

"हुआ यह मैडम" आप लोग जो ये नाच-गाने का वीडियो बनाते हो ना, मेट्रों में चढ़कर तो गर्वनमेंट ने इसे रोकने के लिये हमारी ड्यूटी लगायी है" - सिपाही भावना को सर से पैर तक घूरता हुआ बोला।

"अरे सर! आप थोड़ा को-ऑपरेट करो ना, बस पाँच मिनट में यह वीडियो शूट हो जाएगा" - जतिन सिपाही को शीशे में उतारने की कोशिश करने लगा।

मगर सिपाही टस से मस नहीं हुआ और वो लोग वीडियो बनाने में नाकाम रहे।

मूड ऑफ़ हो गया सब का। सिपाही उन सब को घुड़की दे कर अपनी जगह चला गया।

तभी भावना का फोन वाईब्रेट हुआ। उसने जेब में हाथ डाल कर फोन निकाल कर चेक किया तो उसमें एक न्यूज एप पर नोटिफीकेशन आयी हुई थी।

भावना ने नोटिफीकेशन को खोला और उसमे छपी खबर को पढ़ कर भावना की आँखे तारे की तरह जगमगाने लगी उसके चेहरे पर चमक आ गयी और होंठों पर मुस्कान, इस खबर को पढ़ कर भावना खुद पर काबू नहीं रख पायी और खुशी से चिल्ला-चिल्ला कर नाचने लगी। जतिन, राहुल और डिब्बे में मौजूद अन्य लोग उसे कौतुहल से देखने लगे। जतिन और राहुल को समझ नहीं आया कि भावना ने ऐसा क्या देखा फोन पर कि वह इतनी खुश हो गयी।

तभी लाजपत नगर स्टेशन पर मेट्रो रूकी, भावना और उसकी टीम वहाँ उतर गयी। वह तीनों मेट्रो स्टेशन के एग्जिट प्वाइंट पर पहुँचे।

“सुनो, मुझे ना कुछ काम है, तुम लोग स्टूडियो चले जाओ या चाहो तो तुम लोग भी आज वैलेंटाइन्स डे का ऑफ़ ले सकते हो”- भावना ने मुस्कुराते हुए जतिन और राहुल की तरफ देखते हुए कहा।

भावना के मुंह से ऑफ़ की बात सुनकर जतिन और राहुल ने एक्साइटमेंट से एक दूसरे की ओर देखा।

“ठीक है भावना, सी यू टुमारो”- राहुल ने भावना की ओर देखते हुए कहा।

मेट्रो स्टेशन की पार्किंग में भावना की कार खड़ी थी। उसने जतिन और राहुल को कार से भेज दिया।

भावना ने आस पास गर्दन घुमा कर देखा तो उसे मेट्रो स्टेशन से चंद कदम की दूरी पर ही एक फ्लावर शॉप दिख गयी। उस दुकान में जा कर दुकानदार से उसने एक पर्सनलाइजड बुके "उसके" लिए तैयार करवाया। दुकानदार को बुके का ऑनलाइन भुगतान करने के बाद भावना ने कैब बुकिंग एप से कैब बुक की और कैब का वेट करने लगी।

थोड़ी देर में कैब उसके सामने थी। उसने कैब के नंबर प्लेट से उसका नंबर देखा और अपने एप में बुक की हुयी कैब से मिलाया, सही पाने पर वह कैब का दरवाजा खोल पैसेंजर सीट में जा बैठी और कैब का दरवाजा बंद कर दिया।

"मैडम ओटीपी"?- कैब चालक ने गाडी चलाने से पहले भावना से पूछा।

"3787"- भावना ने अपने मोबाइल से कैब बुकिंग एप खोल कर उसमे आया हुआ ओटीपी उस कैब ड्राईवर को बताया। ड्राईवर ने भी अपने मोबाइल में ओटीपी चैक किया और सही पाने पर कैब "धार माइंस" की ओर बढ़ा दी।

कैब में बैठे-बैठे भावना उन पलों को सोचने लगी जो उसने "उसके" साथ नए साल के अवसर पर "सन-टिब्बा" नामक हिल स्टेशन में बिताये थे। वह पिछले तीन महीने से रिलेशनशिप में थी, जिसकी वजह से वह अपने पुराने रिश्ते से मिले दर्द को भूल कर काफी खुश रहने लगी थी और इन्हीं तीन महीनों में उसके सोशल मीडिया फौलोवर्स में काफी बढ़ोतरी हुई थी। भावना इस नये रिश्ते को अपने लिए बेहद लकी मानती थी। भावना का इस रिश्ते में ये पहला वैलेंटाइन्स डे था जिसे वह " उसके " साथ बहुत ही स्पेशल तरीके से मनाना चाहती थी। वो कड़कती ठण्ड की रात, 31 दिसंबर का खुमार, जब बाहर हो रही बर्फबारी के बीच उन दोनों के सुलगते जवान बदन पहली बार एक हुए थे। भावना को "उसका" वहशियाना अंदाज बहुत पसंद आया था जब "उसने" भावना को

उस सर्दी की रात में अपने प्यार की तपिश का अहसास बिस्तर में पहली बार दिलाया था। "उसका" वो नोचना-काटना साथ ही भावना के बदन पर अपने प्यार की वर्षा करना भावना को "उसका" दीवाना बना गया था। "उसके" होंठ जब भावना के नाज़ुक अंगों को छेड़ते तो भावना की आँहों से वह ऐसी कमरा और गर्म हो उठता था।

प्यार का तूफान गुजरने के बाद "उसने" थक कर अपना सर भावना के सीने पर रखा तो भावना ने उसे कस के अपनी बांहों में भर लिया था और प्यार से उसके माथे पर एक संतुष्टी भरा चुंबन अंकित कर दिया था। "उसके" साथ हुए अपने इस प्रथम मिलन को सोचते हुए भावना का चेहरा शर्म से लाल हो उठा था, उसका बदन तपने लगा था कि तभी कैब ड्राईवर ने "धार माइंस" के पास कैब रोक दी।

कैब रूकने पर भावना जैसे नींद से जागी थी, उसने सीट पर पड़ा अपना मोबाइल दाहिने हाथ से उठाया, और "आर" अक्षर का पैटर्न बना कर उसने अपने फोन को अनलाक किया। इसके बाद उसने कैब बुकिंग एप पर जाकर इस राइड का किराया देखा और ड्राईवर से क्यू आर कोड मांग कर अपने फोन से कोड स्कैन कर उसे पीआईयू के माध्यम से किराया दे कर विदा किया और खुद अपना बैग कंधे पर डालकर और बुके हाथ में लिए हुए चेहरे पर एक मुस्कान लिए "धार माइंस" की ओर बढ़ चली।

"धार माइंस" शहर के बाहर एक बंद पड़ी फैक्ट्री थी। ये "उसका" ही आईडिया था के वो शहर के शोर शराबे से दूर अपना पहला वैलेंटाइन्स मनाएंगे और साथ ही अपने रिश्ते को "ग्रामइन" पर लाइव जा कर ऑफिशियल कर देंगे। धड़कते दिल से भावना उस खंडहर नुमा फैक्ट्री के अंदर पहुंची उस समय शाम के चार बज रहे थे, इस फैक्ट्री के बारे में उसे पता था कि यहाँ लोगों की आवा-जाही ना के बराबर रहती है क्योंकि लोगों का ये मानना था कि यहाँ भूत-प्रेत

का अडडा है। यह अंग्रेजों के जमाने की एक केमिकल फैक्ट्री थी जिसमें ब्लास्ट होने की वजह से उस दिन वहां काम कर रहे सैकडो़ मजदूरों की जान गयी थी। लोगों के अनुसार उन मरे हुए मजदूरों की आत्मा यहाँ भटकती थी।

भावना तय समय पर “उसे” वंहा न पाकर जैसे ही अपना मोबाईल निकालकर “उसका” नंबर मिलाने लगी तभी उसे एक दोपहिया स्कूटी का हॉर्न सुनाई दिया जिसे वह अच्छे से पहचानती थी। “ चीं ” की आवाज के साथ वह स्कूटी उसके सामने आ कर रूकी । स्कूटी सवार ने हैलमेट लगा रखा था और काले रंग की जैकेट और जीन्स पहनी हुई थी।

भावना की मुस्कुराहट उसे देख कर गहरी हो गयी। स्कूटी सवार ने अपने बांये पैर से स्कूटी का स्टैंड लगाया और उसी पर बैठे-बैठे ही अपना हेलमेट उतारा और उसे स्कूटी पर टंगा दिया और अपनी लंबी काली घनी जुल्फों को जोर से झटका दिया। भावना का प्रेमी कोई लड़का नहीं बल्कि एक खूबसूरत जवान लड़की थी जो कि उसी की हमउम्र थी। वह भावना की फैन थी और उसके हर पोस्ट पर कमेंट के रूप में बहुत प्यारी-प्यारी शायरी पोस्ट किया करती थी जिससे भावना बेहद प्रभावित हुयी थी और धीरे-धीरे उनमें दोस्ती और फिर प्यार परवान चढा़, भावना उन दिनों प्यार में मिले धोखे और अपने टूटे दिल के साथ जिंदगी के बहुत ही बुरे दौर से गुजर रही थी, उसे एक ऐसे शख्स की तलाश थी जिसके मजबूत कंधों पर वह अपना सिर रखकर रो सके। उसने अपने टूटे हुए दिल का सहारा “उसमें” ढूंढा। वह स्कूटी से उतरी और दिलकश अंदाज से चलती हुयी भावना की ओर बढ़ चली। दोनों प्रेमियों ने एक दूसरे को अपने आलिंगन में बाँध लिया।

“हैप्पी वैलेंटाइन्स डे लव” - धीरे से फुसफुसाते हुए कान में विश करने के साथ ही “उसने” भावना के कान के लौ को धीरे से काटा।

“सेम टू यू माई एवरीथिंग“- यह कहकर भावना ने भी “उसके“ कोमल गालों पर अपने होठों का रंग लगा दिया।

दोनों एक दूसरे से अलग हुए। मुस्कुराते हुए एक दूसरे को देखने लगे।

“यह बुके मेरी जान के लिए”- भावना ने उसकी तरफ बुके बढ़ाया जो वह “उसके” लिए लायी थी।

“लेकिन मैं तो कुछ नहीं लायी यार तेरे लिए“ - बुके को देखते हुए “उसने” उदास से स्वर में कहा।

“मेरी जिंदगी में तेरी मौजूदगी ही मेरे लिए सबसे बड़ा गिफ्ट है”- भावना ने मुस्कुराते हुए कहा और “उसके” गले लग गयी।

“ओके मैडम”- “उसने” सैल्यूट मारते हुए कहा।

“हा-हा-हा” - भावना की “उसकी” इस अदा पर बेसाख्ता हंसी छूट गयी।

“गिफ्ट तो मैं तुझे दूंगी आज का जरूर, पर यह बता आगे का प्रोग्राम क्या है” कहीं चलना है या यहीं इस भूतिया माइंस में पूरी शाम बितानी है”- “उसने” गरदन घुमा कर माइंस को इधर उधर देखते हुए कहा।

“पहले तू यह देख”- भावना ने अपने शोल्डर बैग से अपना मोबाइल निकालते हुए हर्षित स्वर से बोली। उसने “आर” पैटर्न बनाते हुए मोबाइल को अनलॉक किया। और नोटिफिकेशन के जरिए एक न्यूज एप का पेज खोलकर मोबाइल “उसके” चेहरे के आगे कर दिया।

“यह क्या है” - “उसने” मोबाइल लेते हुए भावना की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए पूछा।

“खुद ही पढ़ लो जानेमन”- भावना चमक के साथ आँखें मटकाती हुयी बोली।

‘‘ब्रेकिंग न्यूज- भारत में समलैंगिकों को भी दूसरे नागरिकों की तरह विवाह का अधिकार’’ -शीर्ष कोर्ट -

यह न्यूज पढ़कर ‘‘वह’’ बच्चों की तरह उछलने लगी और भावना को कस कर अपने गले से लगा लिया।

‘‘सुबह से हर टी॰वी॰ चैनल इस ऐतिहासिक न्यूज को प्रमुखता से दिखा रहा था। आम लोगों में भी खलबली मची हुई थी, जिस कैब में मैं आई और जिस फ्लावर शॉप से तेरे लिए बुके लिया वह फ्लोरिस्ट, यही कह रहे थे कि इस फैसले का हमारी भारतीय संस्कृति पर क्या असर पड़ेगा? विभिन्न शहरों में LGBTQ कम्युनिटी के लोग सड़कों पर अपना सतरंगी झंडा ले कर खुशियाँ मना रहे थे, नाच-गा रहे थे। आखिर क्यों ना हो, प्यार जाति-धर्म -दौलत और लिंग सबसे ऊपर है और आज तो है ही प्यार का पर्व- ‘‘वैलेंटाइन्स डे’’। इस दिन का हर प्रेमी जोड़े को बहुत ही बेसब्री से इंतजार रहता है’’- भावना ने ‘‘उससे’’ अलग होते हुए ‘‘उसकी‘‘ आँखों में आँखें डालते हुए कहा।

‘‘आई एम वेरी हैप्पी, हमारे प्यार को एक लीगल रिक्गनीशन मिल जाएगा, वैलेंटाइन डे का इससे बड़ा तोहफा क्या हो सकता है मेरे लिए? मेरा बच्चा, मेरा बाबू, तू यहाँ आ’’- यह कहकर ‘‘उसने’’ भावना को कमर से पकड़ कर अपनी ओर खींचा और उसके होंठो पर अपने होंठ रख दिए।

भावना ने भी उसे अपने बाहों में जकड़ लिया और वह भी उसका साथ देने लगी, दोनों प्रेमी इस बात से बेखबर थे कि कई जोड़ी आंखें उन्हें देख रहीं हैं।

2

"उसका" नाम रितिका था। भावना की मुलाकात तेईस वर्षीय, दुबली-पतली, कंधे तक के बाल, गेहुंए रंग की पाँच फुट तीन इंच की रितिका से सोशल मीडिया नेटवर्क "ग्रामइन" पर हुयी थी। रितिका, भावना की हर पोस्ट पर शायरी के रूप में कमेंट किया करती थी। भावना को अपनी इस फैन का जुदा अंदाज बहुत भाया। कुछ वक्त के बाद भावना, रितिका के कमेंट्स का उत्तर देने लगी। उसके बाद इनबॉक्स में चैटिंग शुरू हुयी। चैटिंग से बात फोन कॉल्स तक और फोन कॉल्स से मिलने जुलने तक पहुँची। दोनों बहुत ही कम समय में एक दूसरे के करीब आ गये थे।

सहारनपुर की रितिका जब बहुत छोटी थी तभी उसके माता-पिता की मृत्यु हो गयी थी। उसके सगे चाचा-चाची ने अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ते हुए उसे एक अनाथालय में भरती करवा दिया था, शुरूआत के कुछ दिनों के अलावा वह लोग कभी उससे मिलने नहीं आए। माँ की तरफ से भी किसी रिश्तेदार ने रितिका के सर पर हाथ रखने की कोशिश नहीं की। नन्ही रितिका अनाथालय में लोगों के रहमों करम पर पली। वहीं उसने अपनी पढ़ाई अच्छी तरह से पूरी की और अनाथालय के नियम के अनुसार जब वह अट्ठारह वर्ष की हुयी तब उसे अनाथालय छोड़ना पड़ा। अनाथालय की वार्डन के प्रयास से रितिका को शहर में ही एक वकील के यहाँ टाईपिस्ट की नौकरी मिल गयी थी और रितिका ने कमरा भी किराए पर ले लिया था।

रितिका काफी महत्वाकांक्षी थी, परिवार की कमी उसे खलती तो थी मगर उसने इस कमी को कभी अपने महत्वाकांक्षाओं के आगे आने नहीं दिया। वह अपनी जिंदगी में कुछ बनना चाहती थी। पढ़ने में वह तेज तो थी ही तो वकील

के यहाँ से जो सैलरी उसे मिलती थी तो फिजूल खर्च ना कर वह उन पैसों से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करती थी।

रितिका को जब भावना का साथ मिला तब उसने जाना की असली जिंदगी क्या होती है। भावना ने ही रितिका को अपने परिवार से मिलाया, जहां उसने परिवार का महत्व जाना। भावना के माता-पिता रितिका को अपनी बेटी की तरह ही दुलार करते। भावना के पिता ने रितिका को दुपहिया वाहन चलाना सिखाया और फिर उसे एक दोपहिया गिफ्ट की, रितिका ने तो दोपहिया के लिए बहुत मना किया पर वह एक ना माने। भावना की माँ तो भावना से ज्यादा रितिका के मनपसंद पकवान बनाती खाने के लिए।

इधर भावना भी टूटे हुए दिल का शिकार थी, उसने इश्क में पड़कर अपने दिल के हाथों मजबूर होकर बहुत दुःख-तकलीफ झेली थी। भावना जब 18 साल की थी तब उसने अपने घरवालों की मर्जी के खिलाफ जा कर एक लड़के से शादी कर ली थी जिससे वो “ स्टार “ नामक एक बहुत ही प्रसिद्ध सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर मिली थी। दोनों दिन-रात चैटिंग करते, इसी बीच दोनों में प्यार परवान चढ़ा, और वह लोग छुप-छुप कर यहाँ वहाँ मिलने लगे। जब भावना के माता-पिता को इस बात का पता चला तो उनके पैरों तले से जमीन खिसक गयी। उन्होंने उसे बहुत समझाया पर कहते हैं ना कि इश्क का भूत जब चढ़ता है तो सिर चढ़कर बोलता है। भावना के साथ भी यही हुआ। अपने माता-पिता की बातों को अनसुना कर एक रात वह अपने प्रेमी के साथ घर से जेवरात और रूपये लेकर भाग गयी। भावना के माता-पिता ने इसकी पुलिस थाने में रिपोर्ट भी करवायी थी। उन दोनों ने मंदिर में शादी कर ली थी। भावना बालिग थी इस वजह से पुलिस कुछ कार्यवाही नहीं कर पायी। शादी के तीन महीने के बाद भावना को एक दिन अपने पति के आधार कार्ड से पता चला

कि उसका पति दूसरे धर्म का था जिसने उससे अपनी पहचान छिपाई थी और झूठ बोलकर उससे शादी की थी और अब वह उससे धर्म परिवर्तन करने का दबाव डाल रहा था। भावना ने जब यह खबर अपने माता-पिता को दी तब वह आकर उसे ले गये थे। उसके पति ने बहुत हंगामा किया लेकिन इस प्रकार के बढ़ते मामलों में सरकार के सख्त रवैये को देखते हुए कुछ कर नहीं पाया, उल्टा भावना ने उसके खिलाफ मतांतरण करने का केस कर के उसे गिरफ्तार करवा दिया था।

भावना और रितिका, दोनों ने ही कम उम्र में ही अपनों के हाथों दुःख और पीड़ा ही झेली थी, इस दर्द के रिश्ते ने ही दोनों के छलनी दिलों की नाजुक धरती में एक दूजे के लिए प्यार का बीज बोने का काम किया।

“आप जिस नंबर पर फोन लगा रहे हैं वह अभी पहुँच से बाहर है।”ओफ्फो भावना कहाँ है यार तू- झल्लाते हुए आशीष ने फोन को बिस्तर पर पटका। पच्चीस वर्षीय, साँवले रंग का, नजर का चश्मा लगाता हुआ, करीब छह फुट का दुबला-पतला आशीष, भावना का मैनेजर और बचपन का दोस्त था, वह उसे काफी देर से फोन लगा रहा था लेकिन भावना का फोन आउट ऑफ़ रीच आ रहा था।

भावना का अपना एक स्टूडियो भी था जहां से वह अपना सोशल मीडिया का बिजनेस चलाती थी। जतिन और राहुल स्टूडियो आए थे जहाँ उन्होंने भावना के कार की चाबी सौंपते हुए आशीष को भावना के आगे के कार्यक्रम से अवगत करा दिया था।

आशीष को यह बात बहुत अटपटी लगी कि ऐसा क्या काम आन पड़ा कि भावना बिना अपनी कार लिये एक कैब से कहीं गयी है। भावना के माता-पिता दोनों ही सरकारी स्कूल में अध्यापक थे। आशीष ने उन्हें भी पूछा मगर वे लोग भी भावना के बारे में कुछ नहीं बता पाये।

इधर दुनिया से दूर, और आने वाले खतरे से बेखबर भावना और रितिका एक दूसरे में खोए हुए थे।

तभी, चार आवारा किस्म के लड़के जो छिप कर उनका किस करते हुए वीडियो बना रहे थे जोर-जोर से हंसते हुए और ताली बजाते हुए बाहर आए। उन लड़कों ने अपना चेहरा मास्क से ढ़का हुआ था।

“जानेमन एक दूसरे को क्यों तकलीफ देती हो, हमें मौका दो ” उन चारों में से एक जो सबका लीडर जान पड़ता था वह उन दोनों की ओर देखकर बोला। उन सबने उन दोनों को घेर लिया था। हैरान होते हुए दोनों लडकियाँ उन बदमाशों से खुद को घिरा देख कर एक दूसरे से अलग हुयी।

“कौन हो तुम लोग और क्या चाहते हो” रितिका ने उन लोगों से पूछा।

उन लोगों ने शराब पी हुई थी, उनसे तेज दुर्गन्ध आ रही थी।

“बेबी आज वैलेंटाइन्स डे है, जो तुम एक दूसरे के साथ कर रही थीं वो हमारे साथ भी कर लो” - एक दूसरे लड़के ने रितिका को बहुत ही अश्लील इशारा किया और जोर-जोर से हंसने लगा।

“भावना भाग” – मुसीबत का आभास होने पर रितिका चिल्लाई । दोनों ने भागने की कोशिश की लेकिन दो लड़कों ने आगे बढ़कर उनका रास्ता रोक लिया और उनके पेट पर जोरदार घूंसा मारा दोनों दर्द से दोहरी होकर जमीन पर बैठ गयीं। बिजली की तेजी दिखाते हुए पीछे से बाकि दो लड़कों ने उन दोनो की नाक पर बेहोशी की दवा वाला रूमाल रख दिया जिससे वो दोनों पल भर में ही बेहोश हो गयीं।

तभी फैक्ट्री के बाहर सफेद रंग की कार आकर रूकी उसमें से एक कसरती बदन वाला, पाँच फुट दस इंच की लंबाई, नीले रंग का ट्रेक सूट पहने, गोरे रंग का एक युवक फैक्ट्री की ओर बढ़ा और उस जगह पहुँचा जहाँ बेहोश भावना-रितिका और वो चार लड़के थे।

“हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे” - जो उन लड़को का लीडर था उस युवक को आया देखकर बोला।

“काम हो गया लगता है।” युवक रितिका की कमर पर लात मारता हुआ बोला।

“हाँ हो तो गया मगर लड़कियाँ बहुत तेज हैं”- ग्रुप का लीडर आगंतुक युवक की तरफ देखकर बोला।

“इनकी होशियारी अब निकलेगी, इसके हाथ-पैर बांधों और गाड़ी की डिक्की में डालो”

“और दूसरी का क्या करना है, माल तो ये भी जबरदस्त है”- ग्रुप लीडर उस युवक की ओर देखकर एक आँख मारते हुए बोला।

“इस हरामजादी को रास्ते में मौका देखकर कहीं फेंक देंगे”

“मगर”

“जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो”- आगंतुक युवक हल्की सी गुर्राहट अपने स्वर में ला कर बोला।

ग्रुप लीडर ने बाकी लड़कों को इशारा किया तो वह लोग दोनों के मुँह में टेप लगाकर उनके हाथ-पाँव रस्सी से बांधने लग गये।

धार माइंस का वह इलाका शाम के समय और भी डरावना लग रहा था। जहाँ उन बदमाशों और उन बेचारी लड़कियों के अलावा सिर्फ फरवरी की ठंडी हवा साँय-साँय कर बह रही थी।

दोनों बेहोश लड़कियाँ इस बात से अंजान थी कि आने वाला समय उन पर कैसा कहर बन कर टूटने वाला है।

कार वह आगंतुक ट्रैक सूट पहना हुआ युवक चला रहा था, बाकि लड़के दो बाइक्स पर उस कार का पीछा करने लगे। धार माइंस से थोड़ी ही दूर आने पर एक जगह पर कार रोक कर उस युवक उन दोनों में से एक लड़की को रास्ते में बेहोश पड़ा छोड़ दिया। और उसके बाद कार भगा दी। कार शहर की आबादी से बाहर एक सुनसान इलाके में आ कर एक छोटे से घर के सामने आ कर रूकी। मेन गेट खोल कर सब लोग अंदर आ गये। और उस दूसरी बेहोश लड़की को नीचे रखा।

"अब तुम सब की पार्टी शुरू"- ग्रुप के लीडर की ओर वह युवक पाँच-पाँच सौ की दो गड्डियाँ उछालते हुए क्रूर हंसी हंसते हुए बोला।

3

दस दिन के बाद

राजेन्द्र नगर का इलाका और फरवरी की अंधेरी सर्द रात। लगभग एक बजा होगा, तेजी से एक सफेद रंग की एक कार नाले के पास रूकी और उसमें से कोई इंसानी शरीर बाहर फेंका गया और जिस रफ्तार के साथ वह कार आयी थी उसी रफ्तार के साथ अंधेरे में ओझल भी हो गयी।

सुबह के पाँच बजे किसी राहगीर ने नाले में से कराहने की आवाज सुनी उसने पास जा कर देखा तो एक इक्कीस-बाइस वर्ष की लड़की नग्नावस्था में पड़ी थी। उसने घबरा कर सौ नंबर पर पुलिस को इसकी खबर की। थोड़ी देर में पुलिस की गाड़ी सायरन बजाते हुए वहां पहुँच गयी। साथ आयी महिला सिपाहियों ने उस लड़की को नाले से बाहर निकाला और उस को चादर से ढक दिया, उसकी दुर्दशा देखकर पुलिस का कलेजा भी मुंह को आ गया। उसमे जान अभी बाकी थी।

वह भावना थी। प्रसिद्ध सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर।

इन दस दिनों में उसको बुरी तरह मारा - पीटा गया था, रोज वो लड़के उसके साथ निर्दयता पूर्वक बलात्कार करते, उसे खाने को भी कुछ नहीं दिया जाता था। आशीष, भावना का मैनेजर और दोस्त भावना के माता-पिता को लेकर उसी दिन किसी अनहोनी की आशंका से पुलिस में रिपोर्ट करने गया था। मगर थाना इंचार्ज ने उनसे चौबीस घंटे वेट करने का कह कर पल्ला झाड़ लिया था। भावना का फोन उन गुंडों ने उससे छीन कर वहीं माइंस में फोड़ दिया था ताकि कोई उन्हें ट्रेस ना कर सके। पुलिस उसके नंबर को ट्रेस करते हुए अगले दिन

फैक्ट्री में भी गयी, लेकिन वहाँ उन्हें सिवाए टूटे हुए फोन के टुकड़ों और शराब की बोतलों के अलावा कुछ भी नहीं मिला।

भावना ने अपने साथ हुए हादसे से कुछ ही दिन पहले एक दूसरे सोशल मीडिया इन्फ़्लुएन्सर "गगन रहेजा "को रोस्ट (अपने वीडियो के द्वारा किसी का सरेआम मजाक उडा़ना) किया था, जिसकी वजह से वो ट्रोल्स के निशाने पर आ गयी थी। गगन रहेजा के फैंस ने उसे एसिड अटैक और रेप करने की भी धमकी दी थी। खुद गगन रहेजा ने भी भावना का रोस्ट वीडियो वायरल होने के बाद अपना एक वीडियो पोस्ट किया था जिसमें उसने भावना को जवाब देने के बारे में कहा था। पुलिस ने गगन रहेजा को भी हिरासत में रख कर उससे भी घंटों पूछताछ की पर नतीजा कुछ नहीं निकला। पुलिस ने अपनी तरफ से हर उस शख्स से सख्ती से पूछताछ की जिसकी भावना से दुश्मनी थी, सायबर सेल भी भावना के सोशल मीडिया अकाउंटस से कुछ पता नहीं लगा पायी कि भावना के साथ इतनी हैवानियत किसने और क्यों दिखायी। एक प्रसिद्ध सोशल मीडिया इन्लुएन्सर के साथ दरींदगी का मामला अनसुलझा ही रह गया।

4

उन लोगों ने भावना का बुरी तरह से टार्चर किया था। उसके पूरे बदन पर दांतों के काटने के निशान थे। वो लोग उसके गुप्तांग के अंदर बाहरी वस्तुएं भी डालते थे जैसे मेटल रोड। उसके हाथ और पैर मोम और किसी ज्वलनशील पदार्थ से जला दिये गये थे। इतने टार्चर कि वजह से भावना को पहचानना काफी मुश्किल हो गया था। उसका चेहरा काफी सूज गया था, उसके बदन पर हुए जख्मों से मवाद निकल रहा था और उसमें से बदबू आ रही थी। पुलिस का ऐसा मानना था कि उन बदमाशों ने भावना को तब छोड़ा जब उसके जख्म सड़ने लगे थे।

भावना के माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था। कोई समझ ही नहीं पा रहा था कि भावना के साथ ऐसा कर कौन सकता है। इतना टार्चर झेलने के बाद भावना कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं थी। उसके साथ हुयी दरिंदगी से पूरा देश गुस्से और सकते में था। हर सोशल मीडिया प्लैटफार्म पर "जस्टिस फॉर भावना " ट्रेंडिग कर रहा था। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री की ओर से उसे सहायता राशि भी दी गयी थी। पुलिस पर इस केस को सौल्व करने का काफी दबाव था। लेकिन हर तरफ से पुलिस के हाथ खाली थे। जिस हॉस्पिटल में भावना का इलाज चल रहा था उस हॉस्पिटल के बाहर प्रेस का जमावड़ा था। डॉक्टरों की एक पूरी टीम भावना के इलाज में जुटी थी। कुछ दिनों के बाद उसकी हालत में थोड़ा सुधार आया तो पुलिस ने भावना से पूछताछ की लेकिन उससे कुछ खास पता नहीं चल पाया कि भावना के गुनहगार कौन लोग थे, क्योंकि वो लोग अक्सर उसे पेंट में प्रयोग होने वाला थीनर, शराब या नशे का इंजेक्शन लगा के रखते थे जिससे वह होश खो बैठती थी।

थोड़े दिनों के बाद भावना के शारीरिक जख्म भरने लगे। वह, इस हादसे से बहुत ही गहरे सदमें में थी मगर तब भी वह हॉस्पिटल के बेड पर लेटे-लेटे अपनी तकलीफों को भूल रितिका के बारे में सोचा करती थी कि उन बदमाशों ने उसके साथ क्या किया होगा? वो कहाँ होगी? किस हाल में होगी इस वक्त। भावना ने अपने माता-पिता और आशीष से रितिका के बारे में पूछा लेकिन उन लोगों को रितिका की कोई खबर नहीं थी। यंहा तक कि भावना ने आशीष से उसका फोन लेकर “ग्रामइन” पर रितिका की प्रोफाइल चैक करनी चाही ताकि उसे वहां से उसका कुछ पता लगे। लेकिन उसका प्रोफाइल डिलीट हो चुका था। भावना के पास “ग्रामइन” ही एक जरिया था रितिका से संपर्क करने का क्योंकि उसका फोन उन बदमाशों ने तोड़ दिया था जिसमें रितिका का नंबर था। भावना के माता-पिता के पास भी रितिका का नंबर नहीं था। भावना को डॉक्टर ने ज्यादा स्ट्रेस लेने से मना किया था और उसके घरवालों को उसे फोन या सोशल मीडिया या बाहर की किसी भी तरह की कोई भी खबर देने से मना कर दिया था जिससे उसे कोई मानसिक आघात लगे।

एक दिन रितिका भावना से मिलने हॉस्पिटल आयी। उसके हाथ में एक सूखा हुआ बुके था, यह वही बुके था जो भावना ने उसे हादसे वाले दिन यानि वैलेंटाइन्स डे वाले दिन दिया था। उस पर एक स्पेशल रिबन था जिस पर भावना ने “ बी लव आर ” लिखवाया था। भावना उस समय अपने रूम में अकेली थी, रितिका को आया देख उसके चेहरे पर इतने दिनों बाद एक हैरानी भरी मुस्कुराहट आयी।

रितिका ने बुके बेड के साइड में रखा और भावना से लिपट गयी। और काफी देर तक वह भावना से इसी तरह लिपटी रही इधर भावना के आंखों से झर-झर करके आंसू बह रहे थे जो कि रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। तभी अचानक रितिका बिना कुछ कहे तीर की गति से रूम से निकल गयी, भावना ने भी उसे

रोकने की कोई कोशिश नहीं की बस डबडबायी आंखों से उसे जाता हुआ देखती रही और वो बुके, वो मुरझाया हुआ सा बुके, बेड के किनारे अपनी किस्मत को कोसता हुआ मालूम पड़ रहा था।

कुछ दिनों के बाद भावना के पिता ने भावना के कहने पर केस वापस ले लिया। पुलिस ने उन्हें लाख समझाने की कोशिश की, कि वे लोग केस वापस ना ले, पर वह लोग नहीं माने। डिस्चार्ज होने के बाद एक दिन भावना बिना बताये घर से कहीं चली गयी, उसने अपने सारे सोशल मीडिया अकाउंटस भी डिलीट कर दिये।

5

चौदह साल बाद

आजादनगर समुद्र किनारे बसा हुआ एक महानगर था जिसे ‘सपनों की नगरी’ भी कहा जाता था।

इंस्पेक्टर रोहित अपने थाने में बैठा हुआ था। वह अपने फोन पर बैठकर वीडियो देखने में मशगूल था। तभी उसके सामने एक 21 वर्षीय, दुबला पतला सा, नीली जींस और लाल टी-शर्ट पहने एक लड़का आया।

“इंस्पेक्टर साहब मुझे एक कंप्लेंट लिखवानी है” - उस लड़के ने हड़बड़ाते हुए कहा।

रोहित ने मोबाइल से सर उठाकर उसे ऊपर से नीचे तक देखा।

“बैठ पहले आराम से कुर्सी पर, फिर बता।”

लड़का कुर्सी पर बैठ गया।

“सर मैं दयाराम कालेज में बी0कॉम का स्टूडेंट हूँ और अपनी पढ़ाई का खर्चा निकालने के लिए पार्ट टाइम नौकरी किया करता हूँ। एक दिन मैंने अपने कॉलेज के पास दीवार पर एक पोस्टर चिपका देखा जिसमें “ जिगोलों सर्विस ” के बारे में लिखा था। अप्लाई करने वालों को 5000 रुपये प्रति घंटे के हिसाब से कमीशन दिया जायेगा। इस विज्ञापन को पढ़कर मैंने जब पोस्टर पर दिये हुये नंबर पर फोन किया तो वहां से मुझे रजिस्ट्रेशन वगैरह का झांसा देकर मुझसे 60000 रूपये ठग लिये गये।”

“जिगोलो सर्विस”- रोहित ने आँखें चौड़ी करते हुए उसकी तरफ देखते हुए कहा।

“तो तेरा कहना है कि तू जिगोलो बनना चाह रहा था, एक अपमानजनक काम करके पैसे कमाना चाह रहा था।”

“नहीं-नहीं सर, ऐसी बात नहीं है।”- लड़का घबराकर गले में थूक गटकते हुए बोला।

“तो फिर कैसी बात है?” रोहित ने अपनी कुर्सी से उठते हुए उसके पास आ कर कहा।

“सर! वो मुझे पता नहीं था कि जिगोलो सर्विस क्या होता है।”

यह सुनकर रोहित जोर-जोर से हँसने लगा। उसकी हँसी की आवाज सुनकर थाने में मौजूद उसका मुंहलगा कांस्टेबल राजेश भीतर आ गया।

उसको देखकर रोहित और जोर-जोर से ठहाके लगाने लगा।

कांस्टेबल राजेश एक चालीस वर्षीय, गोरे रंग का, भारी बदन का हवलदार था।

“ओह! तो यह मामला साफ-साफ साइबर ठगी का है।” - रोहित ने गहरी साँस लेते हुए कहा।

लड़के को यह नहीं पता था कि यह जिगोलो सर्विस है क्या? लेकिन पुलिस के गले से यह बात नहीं उतर रही थी कि आज के इंटरनेट, सोशल मीडिया, वेब सीरीज के जमाने में एक जवान लड़के को यह पता ना हो “ जिगोलो ” एक मेल प्रोस्टीट्यूट को कहते हैं। थाने में इसी बात को लेकर काफी हंसी ठठ्ठा हो रहा था। खैर, रोहित के कहने पर उसकी रिर्पोट लिखी गयी।

तभी रोहित को कमिश्नर भारद्वाज अपने केबिन में तलब करता है। केबिन के बाहर दो गनर खड़े थे, जिन्हें देखकर उसे लगा जरूर कोई नेता आया है।

लेकिन केबिन के अंदर पहुंचकर उसे जबरदस्त झटका लगा क्योंकि वहां कोई नेता नहीं बल्कि पैंतालीस वर्षीय, गोरा- चिट्टा, लंबा-चौड़ा, क्लीन शेवड्, एक सफ़ेद आधी बाजू की कमीज और काले रंग की पैंट में "संजीव मित्तल" कमिश्नर भारद्वाज के ठीक सामने बैठा हुआ था जिसके चेहरे से ही रईसी टपकती थी। संजीव मित्तल इस शहर का सबसे बड़ा बिजनेसमैन था। उसका बिजनेस पूरे देश और यहां तक कि विदेश में भी फैला हुआ था। उसे शहर का बच्चा-बच्चा जानता था।

इतना बड़ा आदमी जिसे उसने या तो अखबारों में या फिर टी.वी पर देखा था, आज साक्षात् उसके थाने में उसके सामने था।

"सर, आपने मुझे बुलाया" – रोहित ने कमिश्नर को सैल्यूट मारते हुए कहा।

"बैठो रोहित, हमने तुम्हे एक बहुत ही सेंसिटिव केस पर काम करने के लिए बुलाया है"- कमिश्नर भारद्वाज ने संजीव मित्तल के बगल में एक खाली पड़ी कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए रोहित को बैठने के लिए कहा।

रोहित कुर्सी खींचकर बैठ गया।

"ये संजीव मित्तल हैं, देश के बहुत बड़े बिजनेसमैन" – कमिश्नर भारद्वाज ने संजीव मित्तल की ओर देखते हुए कहा। "सर इन्हें कौन नहीं जानता इनके नाम से मैं क्या शहर का बच्चा- बच्चा वाकिफ है" – रोहित उत्साहित हो कर बोला।

संजीव मित्तल यह सुन कर फीकी सी हंसी हंसा।

संजीव मित्तल की बीवी लापता थी। उसकी बीवी भी कोई आम घरेलू महिला नहीं थी, बल्कि शहर की डी0एम0 अंतरा मित्तल थी। अंतरा और संजीव की यह दूसरी शादी थी। उन दोनों ने ही अपने पहले जीवनसाथी को तलाक दे कर एक दूसरे का साथ चुना था।

6

पैंतीस वर्षीय अंतरा एक मामूली घर की लड़की थी। उसके पिता एक सरकारी कार्यालय में क्लर्क थे। उसके परिवार में उसके माता-पिता के अलावा भैया-भाभी भी थे। उसका भाई एक कपड़े की दुकान में सेल्समैन की नौकरी करता था। अंतरा एक महत्वाकांक्षी लड़की थी, जो इस गरीबी के दलदल से निकल कर अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहती थी। किस्मत ने उसका साथ दिया और वह अपनी मेहनत और लगन के बल पर बी0पी0एस0सी की परीक्षा पास कर शहर की डी0एम0 बन गयी।

अंतरा जब अट्ठारह वर्ष की थी तो जवानी के जोश में आकर उसने एक निकम्मे लड़के से प्रेम-विवाह किया था, उसके मायके वाले उसके इस विवाह के बेहद विरूद्ध थे क्योंकि वह लड़का बेरोजगार था और हर माँ-बाप की तरह अंतरा के माँ-बाप का भी सपना था कि उनकी बेटी किसी खाते-पीते घर में जाए और लड़का कोई सरकारी नौकरी करता हो। खैर, होनी को कौन टाल सकता है, अंतरा ने भाग कर उस लड़के से शादी कर ली लेकिन जब अंतरा प्यार के उड़न खटोले से उतर कर धरती पर आयी तब उसे अहसास हुआ कि उसने कितनी बड़ी गलती कर दी थी भावनाओं में बह कर। अंतरा का पति करता धरता कुछ नहीं था बस दिन भर अंतरा के पैसों से घर में पड़ा-पड़ा जुआ खेलता या शराब पीता रहता था। समय के साथ अंतरा माँ बनी। उसे एक लड़का हुआ। अंतरा अपने निकम्मे पति से तलाक लेना चाहती थी लेकिन वह सोने का अंडा देने वाली मुर्गी यानी अंतरा को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। इधर अंतरा उससे तंग आ चुकी थी तो उसने अपनी खुशियाँ बाहर ढूँढनी शुरू कर दी। एक प्रसिद्ध मैट्रीमोनियल वेबसाइट के जरिए उसकी मुलाकात एक विधुर लेकिन करोड़पति संजीव से होती है जिसका खुद के भी एक बच्चा होता है। संजीव

के माता-पिता अंतरा से शादी करने को तो तैयार हो जाते हैं परंतु उस के बच्चे को नहीं अपनाते हैं, संजीव तो बच्चे को साथ रखने को तैयार थे लेकिन वह अपने माता-पिता के मर्जी के खिलाफ जाने की हिम्मत नहीं जुटा सके। गुजरते वक़्त के साथ अंतरा का बच्चा बारह साल का हो चुका था। वह उसे अपने मायके में रखती है।

अंतरा संजीव से शादी कर तो लेती है परंतु बाद में उसे पता चलता है कि मायके में उसके बच्चे की देखभाल सही से नहीं हो रही है। वह बच्चा उसके मायके वालों के लिए एक बोझ ही था। अंतरा का पूर्व पति विकास अंतरा के खिलाफ कोर्ट में बहुविवाह का मुकदमा कर देता है लेकिन अंतरा उसे महीने का एक लाख रूपये और एक पॉश जगह पर बंगले का ऑफर देती है। तब जाकर वह तलाक के लिए माना। यह सब अंतरा ने अपने बच्चे के लिए किया जिसे वह अपने निकम्मे पति के पास यह सोच कर छोड़ देती है कि कम से कम बच्चा अपने बाप और दादा-दादी के साथ तो है उसके अपने मायके वालों ने तो बच्चे की हालत नौकरों से भी बदतर की हुई थी। वह अपने बच्चे से मिलने अक्सर जाया करती थी।

अंतरा जिस दिन गायब हुयी या गायब कर दी गयी उस दिन पॉपुलर रियलिटी शो “बिग मास्टर” का ग्रेंड फिनाले था। जिसे सुपर स्टार शाहबाज खान होस्ट करता था। यह शो अंतरा को बहुत पसंद था। उस दिन वह जल्दी घर पहुंचना चाहती थी। लेकिन वह घर कभी पहुँची ही नहीं।

यह सब बातें संजीव मित्तल ने कमिश्नर भारद्वाज को बतायीं। रोहित चुपचाप संजीव की बातें ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

“आप बिल्कुल भी चिंता मत करिए संजीव जी, अंतरा मैडम को ढूँढने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेगें।”- संजीव के चुप होते ही कमिश्नर ने उसे दिलासा देते हुए कहा।

“यह मेरा सबसे होनहार पुलिस ऑफिसर रोहित है, जिसे मैं अंतरा मैडम का केस सौंप रहा हूँ। ”

“रोहित तुम आज, बल्कि अभी से ही इस महत्वपूर्ण केस पर लग जाओ, देखो किस कमीने ने शहर की डी0एम को किडनैप करने की जुर्रत की है। आकाश-पाताल एक कर दो बट आई वांट दैट बास्टर्ड” - कमिश्नर ने उत्तेजित हो कर रोहित को निर्देश दिया।

आलराईट सर!! यू वोंट बी डिसअपोइंटेड”- कहकर रोहित ने कमिश्नर को जोरदार सैल्यूट मारा और कमिश्नर के केबिन के बाहर की ओर निकल गया।

7

इंस्पेक्टर रोहित ने केस की डिटेल्स जुटायी और लग गया अपने इंवेस्टीगेशन में। हाई प्रोफाईल मामला होने के कारण इसमें राजनीतिक दलों की भी दिलचस्पी थी। कमिश्नर के रोहित को खास निर्देश थे कि जितना हो सके मीडिया को केस से दूर ही रखा जाए जो कि एक बहुत ही मुश्किल काम था।

अंतरा के बारे में रोहित ने उसके घर, दफ्तर, इंटरनेट, अखबारों, सोशल मीडिया, जहाँ से जानकारी जुटा सकता था जुटायी। जिससे वह इस नतीजे पर पहुँचा कि अंतरा बहुत ही कर्मठ, निष्ठावान, निर्भीक, चरित्रवान आ0ई0एस ऑफिसर थी। उसे रिश्वत से और रिश्वत लेने वालों से सख्त नफरत थी। और ऐसे अधिकारी अक्सर जाने अनजाने अपने लिए दुश्मनों की लंबी कतार खड़ी कर लेते हैं। रोहित को अंतरा के ऐसे ही दुश्मनों की तलाश थी जिसके या जिनके कब्जे में अंतरा के होने की संभावना हो सकती है।

ऐसे ही छानबीन करने पर रोहित के हाथों तीन खास टिप लगी जिसका कि अंतरा किडनैपिंग केस से कुछ वास्ता हो सकता था।

पहली सूचना

अंतरा पर कुछ वर्षों पहले ही पैसे लेकर नौकरी देने का आरोप लग चुका था लेकिन वह आरोप महज उसके दुश्मनों की चाल थी। आरोप महज अफवाह ही बन कर रह गए थे।

रोहित ने अपने स्तर पर इस केस की दोबारा से छान-बीन की मगर उसके हाथ कोई सबूत नहीं लगा। जिन लोगों का इस केस में हाथ था वह या तो मर चुके थे या देश छोड़कर जा चुके थे।

दूसरी सूचना

जब अंतरा नयी-नयी सितारगंज के जिला कलेक्टर के पद पर नियुक्त हुयी थी और उस समय उसका अपने नाकारा पति से डाईवोर्स भी नहीं हुआ था तो एक दिन वहाँ के एस0पी0 के घर पर उसके बेटे के जन्मदिन की पार्टी थी जहाँ अंतरा को भी इनवाइट किया गया था। उस पार्टी में वहाँ के सत्तारूढ़ पार्टी के एक बाहुबली रसूखदार नेता अखिलेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ "ददुआ" ने अंतरा को नशे की हालत में पीछे से गलत तरीके से छुआ था।

उसके खिलाफ अंतरा ने छेड़छाड़ का केस दर्ज कराया था। यह मामला उन दिनों अखबारों और सोशल मीडिया में बहुत सुर्खियों में रहा था। "ददुआ" जिसकी पहुँच दिल्ली के राजनीतिक गलियारों तक थी उसके द्वारा अंतरा को केस वापस लेने के लिये बहुत डराया धमकाया गया, उस पर दबाव बनाया गया तथा तरह-तरह से प्रलोभन भी दिये गये लेकिन अंतरा न डरी, न दबावों के आगे झुकी और ना ही किसी भी तरह के प्रलोभन में आयी, वह झांसी की रानी की तरह अपने दुश्मन के आगे अडिग रही और मामले को तूल पकड़ता देख पार्टी अध्यक्ष ने "ददुआ" को पार्टी से निष्काषित कर दिया, उसे पुलिस ने गिरफ्तार किया और जज ने उसे दो लाख का जुर्माना और छहः महीने के सश्रम कारावास की सजा सुनायी थी। हालांकि अंतरा ने जुर्माना लेने से मना कर दिया था जिस वजह से जुर्माने की राशि महिला एवं बाल कल्याण का कार्य करने वाले एनजीओ को दे दी गयी थी।

रोहित ने इस सालों पुराने हाई-प्रोफाइल केस की भी अपने स्तर पर छानबीन की थी तो पता लगा कि "ददुआ" का तो दो वर्ष पूर्व ही हार्ट-अटैक से देहांत हो चुका था, दो बेटियाँ थीं जो ब्याह के बाद अपने-अपने पतियों के साथ विदेश में सैटल्ड थीं। और उसकी विधवा पत्नी पूजा-पाठ और पाले हुए गाय-भैंसों की सेवा सुश्रुषा में व्यस्त रहती थीं। कुल मिलाकर ददुआ के परिवार

वालों की मोबाईल डिटेल्स, बैंक डिटेल्स की छानबीन करने पर रोहित के सामने उन लोगों पर अंतरा के अपहरण कांड से कोई कड़ी जुड़ती हुयी तो नजर नहीं आयी।

तीसरी सूचना

अंतरा का एक ड्राईवर था अशोक, उसका बीस वर्षीय बेटा सन्नी था जिसे लड़कियों में नहीं लड़कों में रूचि थी। वह चोरी छिपकर लड़कियों की तरह बनाव-श्रृंगार करता था। बहन तो उसकी कोई थी नहीं अपनी माँ के कपड़े अकेले में पहन कर खुद की खूबसूरती को आईने में निहारा करता था। एक दिन ऐसा करते हुए अशोक ने उसे देख लिया और खूब पीटा। उसका घर से निकलना बंद कर दिया।

सन्नी को लड़कियां नहीं लड़के पसंद हैं इस बात ने अशोक के होश उड़ा दिए थे। किसी ने उसे यह सुझाव दिया कि एक गुप्त रोगों का डॉक्टर है जो कन्वर्जन थेरेपी से इस तरह के पेशेंटस् का इलाज करता है। यह थेरेपी कई देशों में यहाँ तक कि अपने देश में भी बैन है लेकिन कुछ लोग चोरी-छिपे पैसे कमाने के चक्कर में समलैंगिकों को इस तरह के इलाज के नाम पर टार्चर करते थे।

अशोक सन्नी को उस डॉक्टर के पास ले गया जहाँ उस डॉक्टर ने इलाज के नाम पर उसे मारपीट से लेकर कई तरह के टार्चर किये जिससे तंग आकर सन्नी ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली थी।

जब अंतरा को इस बात का पता लगा तो उसने पुलिस कंप्लेंट कर अशोक और उस डॉक्टर दोनों को अरेस्ट करवाया था जिस पर दोनों ने उसे बरबाद कर देने की धमकी दी थी।

इस सूचना पर रोहित ने जब अशोक और उस डॉक्टर का पता लगवाया तो वह दोनों जेल में बंद मिले।

अब रोहित के पास सस्पैक्ट के रूप में अंतरा का पूर्व पति विकास था।

अगले दिन रोहित उससे मिलने उसके घर पहुँचा। रोहित को वह अपने घर में ही मिल गया था।

पैंतीस वर्षीय विकास अंतरा द्वारा एक पॉश एरिया में दिये गए घर में अपने माता-पिता और चौदह वर्षीय बेटे वैभव के साथ रहता था।

जब रोहित विकास के घर पहुंचा तो विकास घर के ऊपरी फ्लोर में ही बने हुए जिम में एक्सरसाइज कर रहा था। उसका कसरती बदन बिल्कुल फिल्मस्टार्स की तरह था।

रोहित ने अपने सवालों से विकास को घेरने की कोशिश की मगर जिस दिन अंतरा का अपहरण हुआ उस पूरा दिन विकास घर पर ही था क्योंकि उस दिन इंडिया पाकिस्तान का मैच चल रहा था। उसकी इस बात का सबूत उसके घर के बाहर और कॉलोनी के गेट पर लगे हुए सी0सी0टी0वी0 कैमरे थे जिसमें विकास उस दिन कॉलोनी के बाहर कहीं भी आता-जाता कैद नहीं हुआ था।

रोहित ने विकास और उसके माता-पिता के नंबर लेकर उनकी कॉल डिटेल्स भी निकलवायी लेकिन उसके हाथ खाली ही रहे।

इधर रोहित पर इस केस को लेकर सीनियर्स और मीडिया का दबाव बढ़ता ही जा रहा था। संजीव मित्तल ने भी अपने स्तर पर अंतरा को ढूँढने में जमीन आसमान एक कर रखा था। लेकिन अंतरा को जमीन निगल गयी या आसमान जो उसका कुछ पता नहीं लग पा रहा था।

इस केस में जितने भी प्राइम सस्पैक्टस् थे रोहित ने सब से पूछताछ कर ली थी और सब पर बराबर उसके खबरी नजर रखे हुये थे लेकिन पुलिस के हाथ कुछ नहीं लग पा रहा था।

8

उत्तर भारत में स्थित एक पहाड़ी राज्य है "उत्तराखंड" जिसे देश भर में देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है । इसी राज्य का एक दूर दराज का गाँव है "यमुनागढ़" जहां घर ज्यादा और रहने वाले कम थे। इस गाँव के निवासियों की संख्या नाम मात्र की इसलिए थी क्योंकि जवान लोग रोजगार की तलाश में यंहा से पलायन कर गये थे और रह गये थे तो बस नाम मात्र के कुछ बुजुर्ग लोग जिन्हें अपने गाँव से अपनी मिटटी से बहुत प्यार था, उस मिटटी से जिसमे खेलकर उनका बचपन बीता और जिसमे हल चलाकर खेती बाड़ी कर उन्होंने अपना सारा जीवन बिता दिया।

इन बुजुर्गो का अपनी मिटटी के लिए प्यार संतान एवं परिवार के प्यार पर भारी पड़ा और यह बुजुर्ग अपने जीवन की संध्या बिताने के लिए यंही इस गाँव में रुक गये जहां वो पैदा हुए थे। मरघट की तरह वीरान पड़े इस गाँव में पिछले एक हफ्ते से बड़ी अजीब सी हलचल हो रही थी।

गाँव के एक खाली हवेलीनुमा मकान में वैन से कुछ लोग आते और एक दो दिन बाद वहाँ से चले जाते। उस हवेली में कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता था, उन लोगों ने वहाँ विदेशी नस्ल के कुत्ते भी आँगन में छोड़े हुए थे कि गाँव से कोई बिना उनकी मर्जी के हवेली में दाखिल ना हो सके। उन लोगों के आने पर उस बड़े से हवेलीनुमा मकान में मद्धिम सी रौशनी होती थी ।

एक दो लोगों का तो यह भी कहना था कि उन्होंने उस हवेली में देर रात को किसी लड़की के रोने-चीखने और कराहने की आवाजें भी सुनी हैं । जितने मुंह उतनी बातें उस हवेली को लेकर उस गाँव में हो रही थीं लेकिन कोई भी नहीं जानता था कि आखिर उस हवेली में हो क्या रहा था ।

एक दिन बजुर्गों ने आपस में मीटिंग की जिसमें उन्होंने यह फैसला किया कि वह इस हवेली में हो रही संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी पुलिस तक पहुंचाएंगे लेकिन सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि उत्तराखंड का सीमान्त गांव होने के कारण इस यमुनागढ़ में मोबाइल नेटवर्क आता ही नहीं था और पुलिस थाना भी यंहा से कोसों दूर था और वंहा पहुँचने का भी कोई साधन नहीं था। बुढापे की मार झेल रहे इन मुट्ठी भर बुजुर्गों के सामने संचार और यातायात की सबसे बड़ी समस्या मुंह बाए खड़ी थी।

एक दिन गांव में मोटरसाइकिल से एक युवक सरकारी काम से आया। उत्तराखंड का जो नया युवा मुख्यमंत्री आया था उसने एकाकी बुजुर्गों की हाल-चाल, कुशलक्षेम एवं उनकी सुरक्षा के लिए एक अभियान "एक संवाद दादा दादी के साथ" चलाया था। इसी सन्दर्भ में वह युवक इस गांव में कितने बुजुर्ग रहते हैं एवं उनकी क्या समस्या है इत्यादि जानकारी जुटाने के लिए वहा आया था। उस युवक को गाँव में आया देख गाँव वालों ने उसका इस प्रकार से स्वागत किया जैसे कि स्वर्ग से कोई देव दूत उनके गाँव में उतर आया हो क्योंकि उसके रूप में बुजुर्गो को मानों मुंह-मांगी मुराद मिल गयी थी। उन्होंने उस युवक को उस हवेली की वस्तुस्थिति से अवगत कराया तथा पुलिस थाने में जा कर मदद लाने को कहा।

युवक को भी बुजुर्गों की बातों में दम लगा। अगले ही दिन वह पुलिस को लेकर आ गया। पुलिस टीम ने जब उस हवेली में छापा मारा तो उन्हें वहां एक महिला बहुत ही बुरी हालत में मिली।

उस महिला को बुरी तरह टॉर्चर किया गया था। उसके पूरे बदन पर दांतों के काटने के निशान थे। वो लोग उसके गुप्तांग के अंदर बाहरी वस्तुएं भी डालते थे जैसे मेटल रॉड। उसके हाथ और पैर मोम और किसी ज्वलनशील पदार्थ से जला दिये गये थे। इतने टार्चर कि वजह से उस महिला को पहचानना काफी

मुश्किल हो गया था। उसका चेहरा काफी सूज गया था, उसके बदन पर हुए जख्मों से मवाद निकल रहा था और उसमें से बदबू आ रही थी। पुलिस टीम और बुजुर्ग उस महिला की हालत और घटना स्थल को देखकर सन्न रह गये थे।

महिला को उत्तराखण्ड पुलिस ने राजधानी के सरकारी अस्पताल में भरती कराया।

इस कांड की खबर जंगल में आग की तरह हर जगह फैल गयी थी। हर बड़े न्यूज चैनल में यह खबर दिखायी जा रही थी। महिला सदमें में थी और उसकी दशा इतनी खराब थी कि वह बोल पाने की स्थिति में नही थी।

महिला को आई0सी0यू में रखा गया था और उसके कमरे के बाहर पुलिस के दो कांस्टेबल सुरक्षा की दृष्टि से तैनात किये गये थे। महिला की खबर दिखाए जाने के पाँच घंटे के भीतर ही उसका पति जिला अस्पताल में उसके कमरे के बाहर पहुँच गया। जिसे देखकर अस्पताल के स्टाफ और मौजूदा पुलिस कांस्टेबलों के होश उड़ गए। उस महिला का पति कोई और नहीं बल्कि इस देश का मशहूर रईस बिजनेसमैन संजीव मित्तल था और वह महिला कोई और नहीं बल्कि संजीव मित्तल की डी0एम0 बीवी अंतरा मित्तल थी।

उसके बांये हाथ में एक तितली का टैटू था जिसे पहचान कर संजीव ने उत्तराखंड का रूख किया था। राजधानी के एयरपोर्ट पर एक चार्टड प्लेन उतरा। उसमें से संजीव मित्तल और उसका सेक्रेटरी उतरे। उनके आने की किसी को कोई खबर नहीं थी। न ही पुलिस को न ही जिला प्रशासन को और न ही मीडिया को।

आते ही संजीव मित्तल ने जिला अस्पताल का रूख किया।

जब प्रशासन में यह खबर फैली तो हड़कंप मच गया।

"यह मेरी अंतरा ही है, मैं उसका स्पर्श अच्छे से पहचानता हूँ।" – संजीव मित्तल ने अंतरा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा।

अस्पताल के मैनेजमेंट की स्पेशल परमिशन से संजीव मित्तल को आई0सी0यू में अंतरा से मिलने की परमिशन दी गयी।

अंतरा की पहचान होने के बाद उसे संजीव की चार्टर्ड प्लेन के माध्यम से बेहतर इलाज के लिए "आजाद नगर" एयरलिफ्ट किया गया जहां उसे बेहतर इलाज के लिये जंग बहादुर अस्पताल में भर्ती कराया गया। संजीव मित्तल ने अपने सारी ताकत लगा दी अंतरा के इलाज में। पुलिस इंवेस्टीगेशन चालू हुयी पुलिस ने सस्पेक्ट्स से काफी पूछताछ की मगर नतीजा सिफर ही रहा।

इस घटना के करीब छहः महीने बाद रोहित के पास एक युवक आया। उसे आत्मसमर्पण करना था।

वह खुद को अंतरा केस का मास्टरमाइंड बता रहा था। उसका कहना था कि उसी ने अंतरा की यह हालत की है। यह जानकर रोहित और उसकी टीम चौकन्नी हो गयी।

उसे गिरफ्तार कर पुलिसिया कार्यवाही शुरू की गयी। यंहा तक कि उसे थर्ड डिग्री टार्चर दिया गया तब भी उसने मुंह नहीं खोला कि उसने अंतरा के साथ ये सब क्यों किया और ना ही अपने साथियों का नाम बताया। उसका कहना था कि उसने अकेले ही अंतरा के साथ बलात्कार और उसका टॉर्चर किया है लेकिन घटनास्थल और बुजुर्गों के अनुसार वहाँ दो तीन लोग आते थे। हाँ उसने रोहित को अपने विरूद्ध सारे सबूत मुहैया करवाए।

रोहित को उसके एक कमरे के घर से अंतरा की काफी फोटोग्राफस मिली जिनमे से कुछ तो कई वर्षों पुरानी लग रही थी जब अंतरा इक्कीस बाईस वर्ष की रही होगी।

वह युवक बस एक ही बात की रट लगाता रहा कि वह जो बोलेगा अदालत में सबके सामने बोलेगा।

संजीव मित्तल भी उस युवक से जेल में मिलने गया था ताकि वह जान सके कि उसने अंतरा के साथ यह सब क्यों किया?

लेकिन उसने एक ही रट लगा रखी थी कि जो कहेगा वह जज के सामने कहेगा।

यँहा तक कि उसने किसी को अपना वकील भी नहीं नियुक्त किया था।

उससे मिलने भी कोई नहीं आया था इन कुछ दिनों में।

बेहतर इलाज से अंतरा की हालत में काफी सुधार आ चुका था, जिस्मानी घाव तो भर चुके थे लेकिन अब भी वह मानसिक रूप से ठीक नहीं हो पायी थी। वह अक्सर शून्य में निहारा करती थी, रात को डर के बीच-बीच में चीखने चिल्लाने या रोने लगती थी। संजीव मित्तल अंतरा का बहुत बड़ा सहारा थे, वह उसका बहुत ध्यान रखते थे, उसे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ते थे, बिज़नेस की कमान उन्होंने अपने कुछ विश्वासपात्र कर्मचारियों को दे रखी थी। खुद वह दिन-रात घर में अंतरा के साथ ही रहते थे।

इधर पुलिस, मीडिया, देशवासी, संजीव मित्तल और खुद अंतरा यह जानने को बेसब्र थे कि उसने यह कांड किया तो किया क्यों?

हर किसी को बेसब्री से अदालत की सुनवाई का इंतजार था।

सुबह से ही विभिन्न चैनलों पर यह बहस चल रही थी कि अंतरा कांड की सच्चाई आखिर थी तो थी क्या?

कोई इस युवक को अंतरा का कोई सरफिरा आशिक कह रहा था, तो कोई उसे माफिया की करतूत बता रहा था जिनसे अंतरा पंगा लेती रहती थी, या संजीव मित्तल का कोई व्यावसायिक दुश्मन। जितनी मुँह उतनी बातें हो रहीं थी।

इस केस को लेकर उत्सुकता इतने चरम सीमा पर थी कि कई जगह पर तो लोगों ने युवक पर सट्टा भी लगा रखा था कि जरुर उसका अंतरा के साथ प्रेम-प्रसंग था।

जज साहब कोर्ट में आए।

मुजरिम युवक को कटघरे में लाया गया जिसने नीले रंग की जीन्स और सफ़ेद कमीज पहनी हुई थी। जलती हुयी आँखों में कई सवाल लिए काले रंग का सलवार कुरता और दुपट्टा सर पर रखे हुए अंतरा की आँखें उस युवक को घूर रही थीं।

पता नहीं क्यों मगर अंतरा को उसका चेहरा कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था।

वह युवक भी आँखों में अंगारे लिए हुए अंतरा को देख रहा था।

अंतरा उन आँखों में देखने का ताव ना ला सकी और संजीव के कंधे पर अपना सिर रखकर मुँह छिपा लिया।

संजीव को लगा शायद अंतरा अपने बलात्कारी का चेहरा देख कर घबरा गयी है।

कोर्ट में कुछ वक्त गुजर जाने के बाद अंतरा को वह युवक जाने क्यों कुछ जाना पहचाना सा लग रहा था।

वह उसे पहचानने के लिए अपने दिमाग पर जोर डालने लगी मगर कुछ याद नहीं कर पा रही थी और वह युवक अपनी आँखों में खून लिए हुए उसे ही घूर रहा था, उसका ध्यान कोर्ट की गतिविधियों पर ना हो कर सिर्फ और सिर्फ अंतरा पर ही था।

इधर जब जज को पता लगा कि उस युवक का कोई वकील नहीं है तो जज ने उसे वकील नियुक्त कर के दिया।

कोर्ट में जिरह शुरू हुयी।

दोनों पक्षों के वकीलों ने अपनी अपनी दलीलें गवाह और सबूत पेश किये।

मगर लड़का हर पेशी में चुप ही रहा।

बचाव पक्ष का वकील भी झुंझला रहा था कि उसके क्लायंट को जीतने की इच्छा ही नहीं थी।

आज इस केस का आखिरी दिन था।

जब उस युवक को कोर्ट में ले जा रहे थे तब भागते हुए एक आदमी उससे टकराया।

जज ने उस युवक को उम्रकैद की सजा सुनायी।

युवक पर जज के सजा सुनाने का कुछ असर नहीं हो रहा था।

तब भी युवक अंतरा को ही देखे जा रहा था, जिसके चेहरे पर जीत का आत्मविश्वास विराजमान था।

जज साहब सजा सुना कर जैसे ही चुप हुये वैसे ही कोर्ट के सन्नाटे को बेधती एक आवाज गूंजी “कैसी हो रितिका”?

आश्चर्य से भरी कई निगाहें आवाज की दिशा में उठीं। वह आवाज़ उस युवक के कटघरे के तरफ से आ रही थी, वह आवाज़ उस युवक की थी। जज के साथ कोर्ट में मौजूद कई लोगों को तो अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ उन्होंने जो सुना। उन्होंने युवक की आवाज सुनी, उस युवक की जो केस की शुरुआत से आज, केस के ख़त्म होने तक खामोशी की चादर ओढ़े लोगों की नफरत भरी बेधती निगाहों का सामना कर रहा था।

हाँ-हाँ ईमानदार, न्याय की मूर्ति कलेक्टर साहिबा मिसेज अंतरा मित्तल आप ही से कह रहा हूँ, कैसी हो रितिका?

सबकी निगाहें अपने आप ही युवक से हट कर अब अंतरा की तरफ उठ चलीं, लोगो के बीच काना फूसी होने लगी कि "ये अंतरा रितिका कब से हो गयी?

"पहचाना मुझे मैं भावना, नाम तो शायद तुम्हे याद नहीं होगा।" व्यंग्यात्मक लहजे में उस युवक ने अंतरा की तरफ देखकर कहा जिसका चेहरा मानों सफेद राख की तरह हो गया हो, उसके काटो तो खून नहीं।

"वही भावना जिसका परिवार तुम्हें अपने परिवार के जैसा लगता था"

"वही भावना जिसकी हर सोशल मीडिया पोस्ट तुम्हारे दिल को छू जाती थी"

"वही भावना जो तुम्हारी दुनिया थी"

"वही भावना जिसके साथ तुमने जीने मरने की कसमें खायी थी"

"वही भावना जिससे तुमने वादा किया था कि सैक्स चेंज ऑपरेशन के बाद तुम उससे शादी करोगी।"

"वही भावना जिसका तुमने अपने बॉयफ्रेंड और उसके दोस्तों से चंद रूपयों के लालच में बलात्कार करवाया था कई-2 दिनों तक।"

“वही भावना जिसका बलात्कार का वीडियो पोर्न साइट्स पर अपलोड कर तुम लोगों ने बहुत पैसा कमाया और उसी पैसो से तुमने बी0पी0एस0सी परीक्षा की कोचिंग ली और बन गयी कलेक्टर।“

“वही भावना जो अस्पताल में जब एक जिंदा लाश बन कर पड़ी थी तो क्या कहा था तूने कुतिया बोल”- क्रोध की अधिकता से उस लड़के ने कटघरे को कस कर पकड़ लिया और कांपने लगा, “बोल हरामजादी तूने मेरे कान मे उस दिन क्या कहा था”?

कोर्ट में सभी लोग भौचक्के हो कर पूरा तमाशा देख रहे थे। “तूने, तूने कहा था तू लेस्बियन नहीं है। जब मेरे साथ हाथ में हाथ डाल कर घूमती थी तब तू लेस्बियन थी, जब मेरे साथ जीने मरने की कसमें खा रही थी तब तू लेस्बियन थी, जब तूने मुझे शादी के सपने दिखाये थे तब तू लेस्बियन थी। जब तूने मेरे साथ हिल स्टेशन पर रातें बिताई थी तब तू लेस्बियन थी”। युवक की आँखों से ऐसा लग रहा था मानों आग बरस रही हो। उसका पूरा चेहरा तमतमा रहा था।

“प्यार करती थी मैं तुझसे, प्यार। लेकिन तुझ जैसी स्वार्थी औरत क्या जाने प्यार का मतलब। तूने दुनिया के सामने अच्छाई का मुखौटा लगाया हुआ है लेकिन तू कितनी जलील है ये सिर्फ और सिर्फ मैं जानती हूँ। जिसने एक लड़की का बलात्कार करवा कर उन पैसो से अपनी पढाई की। तेरी ये डिग्री मेरी चीथड़े-चीथड़े हो चुकी इज्जत के कब्र पर बनी है और तेरे प्यार ने मुझे क्या से क्या बना दिया मैं भी एक गुनहगार बन गयी, बिल्कुल “तेरी तरह”,युवक या कहा जाए भावना ने उसकी तरफ एक उंगली उठाते हुए कहा।

कोर्ट में इस रहस्योद्धाटन से मानों भूचाल आ गया, लोग आपस में काना फूसी करने लगे।

अंतरा को मानों काटो तो खून नही। वह अपनी सीट से उठ कर खड़ी हो गयी। और कोर्ट से भागने की कोशिश करने लगी लेकिन संजीव मित्तल ने तभी कस कर उसका हाथ पकड़ लिया, अंतरा की अविश्वास पूर्ण नजरें पहले अपने हाथ पर टिक कर अपने पति संजीव की तरफ उठी। संजीव मित्तल कठोरता पूर्ण नेत्रों से कभी अंतरा को तो कभी भावना को देख रहे थे। अंतरा ने अपने आप को संजीव के मजबूत हाथों की गिरफ्त से खुद को छुड़ाने की नाकाम कोषिश की।

"अंतरा तुम इतना नीचे गिर सकती हो मैं कभी सोच भी नहीं सकता पूरे जिले की जिम्मेदारी उठाने वाली लोगों की नजरों में बेदाग छवि रखने वाली डी0एम0साहिबा एक गिरी हुयी मक्कार औरत हो सकती है, छीः धिक्कार है तुम पर अंतरा, एक औरत हो कर तुमने एक औरत के साथ इतना घिनौना कार्य करवाया, कल तक जिस अंतरा के नाम पर मैं छाती चौड़ी कर के सोसायटी में घूमता था आज उसी अंतरा को अपनी बीवी कहने में मुझ पर घड़ों पानी पड़ रहा है। मुझे पता है कि भावना सच कह रही है, मैंने अपने सूत्रों से इसके बारे में पता लगवाया है। मैं तुम्हें अभी और इसी वक्त डाइवोर्स देता हूँ, मैं तुम जैसी घटिया दर्जे की स्वार्थी और मक्कार औरत के साथ और नहीं रह सकता।"- संजीव ने एक सांस में अपना फैसला सुना दिया।

अंतरा आँखों में आँसू लिए संजीव को एकटक देखी जा रही थी। उसके आँसू संजीव के हाथ पर गिर रहे थे पर संजीव पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था वह संजीव जिसकी दुनिया अंतरा से शुरू होती थी और अंतरा पर ही खत्म, वह संजीव जिनकी ज़िन्दगी का पत्ता भी अंतरा की मर्जी से हिलता था, वह संजीव जिसकी जुबान से अंतरा से बात करते हुए फूल झड़ते थे उसी संजीव की जुबान और दिल दोनों ही पत्थर का बन चुका था। वह तो मानों अंतरा को अपनी जिंदगी से निकालने का मन बना चुके थे।

तभी अंतरा की हृदय विदारक चीख सुनायी दी, उसकी आँखें उबल कर बाहर को आने लगी। वह नीचे गिर पड़ी उसकी गरदन से खून का फव्वारा फूट पड़ा और भावना ताबड़ तोड़ उस पर चाकू से वार करने लगी। कोई कुछ समझ पाता इससे पहले ही भावना ने तीस सेकंड के अंदर ही अंतरा पर चाकू से पूरे दस वार कर डाले। खून से लथपथ अंतरा ने वंही दम तोड़ दिया था।

तभी एक गोली भावना के सीने में आ कर लगी, कोर्ट में मौजूद पुलिस कर्मी ने अपनी पिस्तौल से उस पर दो गोलियाँ दाग दी। भावना कटे हुए पेड़ की भाँति जमीन पर गिर पड़ी। उसकी दोनों आँखों से आँसू निकल कर उसकी गाल पर ढुलक पड़े।

पुलिस ने जब भावना की तलाशी ली तो उसके गले में एक बड़ा सा लॉकेट मिला जो खुलता था, जिसे खोलने पर एक पुरानी तस्वीर निकली जिसमें दो खुबसूरत लडकियां एक दूसरे की बांहों में समायी थीं।

एक लड़की तो युवा रितिका उर्फ अंतरा थी और दूसरी लड़की की तस्वीर को जब पुलिस ने ध्यान से देखा तो पाया कि अंतरा के साथ जो दूसरी युवा लड़की थी वह वही युवक या भावना थी जिसने अंतरा के प्यार में अपना सैक्स चेंज ऑपरेशन करवाया था और जिसे अंतरा के प्यार में धोखे के अलावा कुछ ना मिला और इस प्रेम कहानी का अंजाम बहुत ही भयानक हुआ।

भावना की जेब में चाक़ू कहाँ से आया इस बात का पता लगाने के लिए जब पुलिस ने कोर्ट में लगे सीसीटीवी की फुटेज चेक की तब पाया कि जो लड़का भावना से टकराया था उसी ने उसके कपड़ों में चाक़ू खोंस दिया था, वह लड़का और कोई नहीं भावना का दोस्त और मेनेजर "आशीष" था, जिसने भावना की सेक्स चेंज ऑपरेशन से लेकर अंतरा से बदला लेने में मदद की, भावना के माँ-बाप तो अपनी बेटी के साथ हुए हादसे के दो वर्षों के बाद ही इस दुनिया से चले गए थे, रह गयी थी तो बस आत्मा और दिल से जख्मी भावना, जिसका

एकमात्र सहारा बना उसका दोस्त “आशीष”, जो उस वक़्त भी कोर्ट में मौजूद था जब भावना ने अंतरा पर हमला किया था।

और अंतरा की मौत के बाद जिसने खुद ही पुलिस को आत्म समर्पण कर दिया था।

आशीष ने पुलिस को बताया कि अंतरा उर्फ़ रितिका ने भावना को अपने जाल में फंसाया था अपने बॉयफ्रेंड के कहने पर। अंतरा ने अपने अनाथ होने की झूठी कहानी बताई, उससे प्यार का झूठा नाटक किया। उसे फंसा के उस सुनसान जगह पर लायी जहां किराए के गुंडों की मदद से भावना का किडनैप किया और उसके साथ इतना बदतर सुलूक किया।

अंतरा का बॉयफ्रेंड और कोई नहीं उसका पति विकास ही था जिसने भावना के बलात्कार और उसके टॉर्चर का वीडियो पोर्न वेब साइट्स में बेच कर पैसा कमाया और कुछ पैसा उसने क्रिकेट में सट्टा लगा दिया था और बाकी का अंतरा ने अपनी कोचिंग में। विकास ने अंतरा के नाम का पहला अक्षर अपनी छाती पर एक अलग ही पैटर्न में गुदवा रखा था, वैसे तो विकास हमेशा चेहरे पर मास्क लगा कर रहता था और भावना की भी आँखों पर अक्सर पट्टी होती थी या वह केमिकल्स के नशे में होती थी, पर किसी दिन उसने विकास की छाती का वह टैटू देखा था, यही वह एकमात्र सुराग था जो वह अपने बलात्कारियों के बारे में जानती थी।

फिर एक दिन जब इस घटना के सात साल बीत गए तब अचानक उसे अंतरा की सोशल मीडिया पर प्रोफाइल दिखाई दी, जो ओपन थी मतलब उसे कोई भी बिना फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजे ज्वाइन कर सकता था। भावना ने उसकी प्रोफाइल ज्वाइन की तब उसे अंतरा और विकास की एक फोटो दिखी जिसमे भावना को वह टैटू दिख गया, जिसे उसने एकदम से पहचान लिया।

भावना और आशीष ने मिलकर सब सच्चाई का पता लगाया, और फिर सच्चाई जान कर भावना की ज़िन्दगी का एकमात्र मकसद अंतरा से बदला लेना बन गया। आशीष के बयान देने पर पुलिस ने विकास को भी गिरफ्तार कर लिया और पूरे देश में इस घटना से लोगों का गुस्सा उबाल पर था, कोई यकीन ही नहीं कर पा रहा था कि अंतरा जो कर्तव्य निष्ठां और इमानदारी की मूरत थी उसने सिर्फ कोचिंग के पैसों के लिए किसी लड़की का बलात्कार करवाया।

इधर अंतरा की हकीकत जानने के बाद संजीव मित्तल को उससे इतनी नफरत हो गयी थी कि उन्होंने उसकी लाश का क्लेम भी नहीं किया। उसके मायके वालों ने ही उसकी लाश का क्रिया कर्म किया, हालांकि अंतरा के बेटे को वह विकास के माँ- बाप से दस करोड़ रुपये और उस घर का मालिकाना हक दे कर जिस घर में वह लोग रहते थे, अपने घर ले आए और अपने सगे बेटे की तरह ही उसकी परवरिश करने लगे।

समाप्त

राखी का कसूरवार

सुबह के दस बजे थे। इंस्पेक्टर रोहित वीडियो काल में अपनी माँ गीता देवी और बहन रितिका के साथ बात कर रहा था। उसकी शादीशुदा बहन रितिका अपने पति और बच्चों के साथ अमेरिका के शिकागो शहर में रहती थी। जिसका टाईमजोन भारत के टाईम से 12 घंटे पीछे था। बीते हुए कल में भारत में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया गया था। और आज के दिन रितिका शिकागो में रक्षा बंधन का त्योहार ऑनलाइन मना रही थी। उसने रोहित के लिए राखी खरीदी थी और ऑनलाइन ही उसको बांधने का उपक्रम कर रही थी। दोनों भाई-बहन के लिए यह बेहद ही भावुक कर देने वाला क्षण था। रितिका रोहित की जुड़वां बहन होने के साथ-साथ उसकी इकलौती दोस्त भी थी। रितिका रोहित से सिर्फ पाँच मिनट बड़ी थी लेकिन फिर भी रोहित उसे दीदी कह कर संबोधित करता था। शर्मीले एवं शांत स्वभाव का रोहित दोस्त बनाने में झिझकता था। उसके एक-दो ही दोस्त थे बाकि रितिका की शादी के पहले रोहित का सारा समय रितिका के साथ ही बीतता था। दोनों दो जिस्म एक जान थे। जब रितिका की विदाई हुयी तब रोहित दो दिन तक बहुत रोया।

रोहित ने अपने हाथ में रितिका की बांधी पुरानी राखी पहनी हुयी थी इस अहसास के लिए कि रितिका रक्षाबंधन पर उसके पास, उसके साथ है।

तभी एक आदमी रोता हुआ उसके केबिन में घुसा। "साहब मेरी बहन कल से घर नहीं आयी है उसे ढूँढिए ना साहब"

"अच्छा दीदी मैं बाद में बात करता हूँ"- ये कहकर रोहित वीडियो कॉल पर से डिसकनेक्ट हो गया। रोहित अपनी माँ गीता देवी के साथ देहरादून के पुलिस लाइन में मिले क्वाटर में रहता था। उसका ट्रांसफर देहरादून हो गया था।

"अरे! तुम पहले बैठो। फिर आराम से बताओ कि बात क्या है"- रोहित ने सामने खड़े व्यक्ति को कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए कहा।

वह व्यक्ति कुर्सी पर बैठा वह तीस साल का सामान्य कद काठी का युवक था। जिसने सफेद रंग की शर्ट और ग्रे पैंट पहनी थी। चेहरे पर हल्की दाढ़ी और मूंछ बढ़ी हुयी थी वह देखने से ही बेजार नजर आ रहा था। रोहित ने उसकी ओर मेज पर रखा हुआ पानी का गिलास बढ़ाया। उस आदमी ने पानी का गिलास लिया और एक ही साँस में खाली कर दिया।

"साहब मेरा नाम वीरेन्द्र है। मैं राजपुर में रहता हूँ। मेरी 20 वर्षीय बहन गरिमा सहारनपुर में हमारे बुआ के लड़के सूरज को राखी बांधने के लिए अकेले गयी थी। वह कल से वापस नहीं आयी है साहब!!"- वह रूआँसे स्वर में बोला।

"अच्छा वह कितने बजे गयी थी और कैसे गयी थी"?

"वह हमें राखी बांधने के बाद करीब बारह बजे की बस में गयी थी। मैं ही उसे बस अड्डे छोड़ कर तब अपनी दुकान गया था।"

"हमें राखी बांधने का मतलब। आपका कोई और भाई भी है क्या?"

"हाँ। मेरा एक छोटा भाई भी है। बहन हमारी सबसे छोटी है"

"आपकी किस चीज की दुकान है?"

“जी मेरी किराने की दुकान है”

“अच्छा आप एक काम करिए रिपोर्ट लिखवा दीजिए और अपनी बहन की फोटो अगर साथ लाए हों तो वो भी जमा करवा दीजिएगा”।

“साहब मेरी बहन कभी भी अपना मोबाईल बंद नहीं रखती थी और कल से उसका मोबाईल बंद आ रहा है”

“ठीक है आप सारी डिटेल्स रिपोर्ट में दे दीजिए। मैं देखता हूँ इस केस को”

वीरेन्द्र राजपुर में किराने की दुकान चलाता था। दुकान के ही थोड़ी दूर पर उसका घर था। उसकी बीवी का नाम था प्रीति जो कि एक छब्बीस वर्षीय भरे पूरे बदन की गोरे रंग की महिला थी। वीरेन्द्र और प्रीति की शादी को वैसे तो पाँच साल हो चुके थे पर उनकी कोई औलाद नहीं थी। वीरेन्द्र का बाईस वर्षीय छोटा भाई था नरेन्द्र। गरिमा और नरेन्द्र दोनों ही कॉलेज के छात्र-छात्रा थे। माता-पिता का साया वीरेन्द्र के सिर से काफी पहले ही उठ गया था लेकिन उसने अपने छोटे भाई-बहन की परवरिश अपनी औलाद की तरह की थी।

“भईया गरिमा को गए हुए अब चौबीस घंटे हो चुके हैं उसका कोई पता नहीं चल रहा है। पता नहीं वो कहाँ और किस हाल में होगी”- नरेन्द्र ने वीरेन्द्र को घर में प्रवेश करते हुए देख कर कहा- “उसका फोन अब भी स्विच ऑफ ही आ रहा है। मैं रात से उसे ट्राय कर रहा हूँ।”- नरेन्द्र का स्वर रूआँसा सा हो गया।

“मैं पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट ही लिखवा कर आ रहा हूँ”- वीरेन्द्र ने संक्षिप्त उत्तर दिया और सोफे पर बैठ गया।

"आप लोग खाना खा लीजिए। पुलिस गरिमा को ढूँढ ही लेगी। मुझे लगता है कि वह अपनी किसी सहेली के घर चली गयी होगी"- प्रीति ने वीरेन्द्र के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"तुम लोग खा लो मैं तो गरिमा के साथ ही खाऊँगा"- कहकर वीरेन्द्र अपने कमरे में चले गए। गरिमा को गायब हुए पूरे तीन दिन बीत चुके थे लेकिन उसकी कोई खबर नहीं थी। इस बीच दोनों भाईयों ने भी थाने के तीन-चार चक्कर भी लगा लिये थे लेकिन कोई खबर नहीं थी। उन दोनों ने अपने स्तर पर रिश्तेदारी। आस-पड़ोस और गरिमा के कॉलेज में उसके दोस्तों में भी पूछ-ताछ की लेकिन गरिमा का कोई पता नहीं चला। गरिमा के बिना वीरेन्द्र का घर सूना लग रहा था। वह सब की आँख का तारा थी। किसी ने भी ढंग से खाना नहीं खाया था इन चार दिनों में।

****

पाँचवें दिन वीरेन्द्र के नंबर पर थाने से कॉल आयी। पुलिस वालों को सहारनपुर के जंगलों से एक युवती की लाश मिली थी उसी की शिनाख्त के लिए वीरेन्द्र को मोर्चरी में बुलाया गया था। वीरेंद्र, नरेन्द्र और प्रीति यह खबर सुन कर जिस हाल में थे उसी हाल में दौड़ पड़े। वहाँ लाश को देख कर वीरेन्द्र तो पछाड़ खा कर गिर पड़ा और नरेन्द्र और प्रीति की जोर से रूलाई फूट पड़ी। वह एक युवती की सड़ी-गली लाश थी जिसके एक हाथ की मुट्ठी बंद थी। लाश के कपड़ों और उसके बांये हाथ पर तीन तिल एक साथ होने का निशान देख कर वीरेन्द्र ने उस लाश को पहचान लिया था। वह गरिमा की ही लाश थी।

****

भले ही गरिमा वीरेन्द्र की बहन हो लेकिन प्यार और दुलार वह उसको अपनी बेटी की ही तरह करता था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से यह बात सामने आयी कि

लड़की की मृत्यु गला घोंटने से हुयी थी और उसके साथ कई लोगों ने बलात्कार भी किया था। उसके बदन पर काफी दाँतों और खरोंचों के निशान पाये गये और वह दो महीने की प्रेग्नेंट भी थी। यह सब सुन कर वीरेन्द्र पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, उसकी बेटी समान एकलौती बहिन का किन दरिंदों ने ऐसा हाल बना दिया था।

इंस्पेक्टर रोहित ने अपनी इंवेस्टीगेशन शुरू की। सबसे पहले एक पुलिस टीम सहारनपुर गरिमा के बुआ के घर गयी जहाँ पूछताछ पर पता चला कि गरिमा वहाँ एक बजे के करीब आयी थी और सूरज को राखी बांधने के बाद उसने वहीं पर दोपहर का खाना खाया और कुछ देर रूकने के बाद वह शाम चार बजे की बस से अपने घर के लिए निकल गयी थी। उसके बाद गरिमा के बारे में उस के आस-पड़ोस में पूछताछ की सब जगह से यही निष्कर्ष निकला की गरिमा का ध्यान केवल पढ़ाई-लिखाई में रहता था। वह आस-पड़ोस के बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाया करती थी। वीरेन्द्र और उसके परिवार की किसी से कोई दुश्मनी भी नहीं थी। सबने उसके परिवार के बारे में अच्छा ही बोला था। छोटा भाई नरेन्द्र बन ठन कर रहता था। जिम जाने के कारण उसका बदन काफी आकर्षक और कसरती था। पढ़ाई में वह औसत ही था। दोस्तों के साथ बाईक ले कर यहाँ-वहाँ घूमना उसे बेहद पसंद था। प्रीति भी एक घरेलू महिला थी। वह भी अपने काम से काम रखती थी। दुआ-सलाम उसकी सब से थी लेकिन दूसरी औरतों की तरह वाचाल एवं दूसरों के घरों में तांक-झांक करना या दूसरों की ढकी-छुपी बातों को जग-जाहिर करना उसकी आदत नही थी। गरिमा का मोबाईल फोन घटना स्थल से थोड़ी ही दूर पर मिला था लेकिन उसमें लॉक लगा हुआ था। रोहित ने उसे साइबर सैल भिजवाया हुआ था।

गरिमा के कॉल डिटेल्स निकलवाए गए। उसमें एक नंबर से उसकी लंबी-लंबी बातचीत होती थी वह नंबर किसी पंकज का था। छानबीन करने पर पता लगा कि पंकज कॉलेज में गरिमा का सहपाठी था और दोनों के बीच प्रेम-संबंध थे।

पंकज एक साधारण सा दिखने वाला गरिमा का ही हमउम्र युवक था। रोहित ने पूछताछ के लिए उसे थाने बुलाया। वह अपने पिता के साथ आया था। जो कि ई-रिक्शा चलाते थे। उसकी शक्ल पीली पड़ी हुयी थी। उसे देखकर ही लग रहा था कि वह बहुत गमगीन है।

"चल बता भाई क्यों मारा तूने गरिमा को? रोहित ने पंकज से सीधा सवाल किया।

"ये क्या कह रहे हैं इंस्पेक्टर साहब मेरा लड़का पढ़ने लिखने वाला बच्चा है वह किसी को भला क्यों मारेगा? पंकज की जगह उसके पिता ने सवाल का उत्तर देते हुए कहा।

"आजकल के पढ़ने लिखने वाले बच्चे ही जघन्य अपराधों में शामिल होते हैं"- रोहित ने पंकज के पिता को आँख दिखाते हुए कहा।

"हाँ भाई तू बता क्यों मारा तूने गरिमा को"- रोहित ने कुर्सी पर अपना पहलू बदलते हुए दोबारा पंकज पर सवाल दागा।

"मैं क्यों मारूँगा गरिमा को सर मैं तो उससे प्यार करता था"- पंकज ने रूआंसे स्वर में कहा।

"अच्छा"

"हाँ सर!!! मैं और गरिमा दो साल से रिलेशनशिप में थे और कॉलेज खत्म हो जाने के बाद अपने-अपने कैरियर में सैटल हो जाने के बाद हम शादी भी करना चाहते थे"

“तुझे पता है कि गरिमा दो महीने की प्रेग्नेंट थी।”

पंकज चुप रहा।

“बोलो”

“जीं...बताया था उसने”- पंकज ने सिर नीचे करते हुए कनखियों से अपने पिता की ओर देखते हुए कहा।

“कमीने तूने यह क्या किया। तू कॉलेज पढ़ने जाता है या ये सब करने”- पंकज के पिता ने यह सुनकर उसे दो हत्थड़ जमाते हुए कहा।

“सुनिए!!! सुनिए सर आप पंकज को डाँट फटकार, चाहे तो जान से मार भी देना लेकिन अपने घर जा कर। अभी जरा मुझे मेरी इंवेस्टीगेशन पूरी कर लेने दीजिए। नही तो आप बाहर बैठिए।”- रोहित ने पंकज के पिता को चुप कराते हुए कहा।

पंकज का पिता मन मसोस कर चुप बैठने को मजबूर हो गया।

“हाँ भाई पंकज अब बता तू आगे कि यह खबर सुनकर कि गरिमा तेरे बच्चे से प्रेग्नेंट है तूने क्या किया”- रोहित अपने बड़े से रिवॉल्विंग चेयर में पीछे की ओर ढ़हता हुआ बोला।

“सर मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं थी मैं गरिमा से प्यार करता था और मैंने उसे पहले तो एबॉर्शन करवाने के लिए कहा था लेकिन वह एबॉर्शन के लिए नहीं मानी तो मैंने उसे कह दिया था कि हम घरवालों को पूरी बात बता कर एक दो महीने में शादी कर लेंगे।”- यह कहकर पंकज की रूलाई फूट पड़ी- “सर मेरा तो परिवार ही खत्म हो गया। मेरा बच्चा। गरिमा”- यह कहकर पंकज जोर जोर से रोने लगा।

इंस्पेक्टर रोहित ने पंकज के पिता को इशारे से कहा कि वो उस ले जाए। पंकज के पिता ने रोहित का इशारा समझा और पहले खुद उठा फिर रोते हुए पंकज को दोनों हाथों से पकड़ कर उठाया और फिर केबिन से बाहर की ओर दोनों बाप-बेटा घर जाने को निकले।

रोहित उन दोनों को पुलिस स्टेशन से बाहर जाते हुए देखता रहा। पंकज से पूछताछ पर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि पंकज खूनी नहीं हो सकता। रोहित ने पंकज की आँखों में गरिमा और अपने अजन्में बच्चे को खो देने का दुःख देखा था।

****

जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे थे गरिमा का केस उलझता ही जा रहा था। पुलिस को कहीं से कोई लीड नहीं मिल पा रही थी। उधर मीडिया और विपक्ष इस केस की आँच को और हवा दे रहा था। सोशल मीडिया में भी इस घटना को लेकर जबरदस्त उबाल देखने को मिल रहा था। सारे सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर "जस्टिस फॉर गरिमा" ट्रेंड कर रहा था।

रोहित पर इस केस को लेकर अपने सीनियर्स की तरफ से बहुत ही दबाव था। उसका पुलिसिया दिमाग कह रहा था कि "बगल में बच्चा और शहर में ढिढोंरा"। कहने का मतलब कातिल उसकी नजरों के सामने हो कर भी नजर में नहीं आ रहा था। कोई ऐसा जो गरिमा का बेहद करीबी हो। रक्षाबंधन वाले दिन जब भाई अपनी कलाइयों में अपनी बहनों की बांधी हुयी राखी सजा के निकलते हैं उस दिन गरिमा, जो किसी की बहन थी, वह जाने किन दरिंदों का शिकार हुयी थी। जाने किस बहन का भाई होगा वो जो किसी और की बहन का रक्षाबंधन वाले दिन बलात्कार कर बैठा।

गरिमा ने अपने घर के एक कमरे में ही अपना कोचिंग इंस्टीट्यूट खोला हुआ था जिसमें वह आस-पास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाया करती थी। दिन के ग्यारह बजे पुलिस की जीप वीरेन्द्र के छोटे से दो मंजिला मकान के गेट के बाहर रूकी। रोहित एक हवलदार के साथ आया था। उसने गेट खटखटाया जिसे सुन कर प्रीति बाहर आयी।

“मैं एक बार फिर गरिमा के रूम की और उसके कोचिंग की तलाशी लेना चाहता हूँ”- रोहित ने प्रीति के सवालिया नजरों का उत्तर देते हुए कहा।

“आ जाइए।”- प्रीति ने रोहित के लिए गेट खोलते हुए कहा। रोहित और हवलदार अंदर आए। गरिमा का कमरा पहली मंजिल पर था। रोहित ने गरिमा के कमरे की पहले भी तलाशी ली हुयी थी पर वह एक बार और अपनी तसल्ली कर लेना चाहता था। वह गरिमा के कमरे में गया। गरिमा की मौत के बाद भी प्रीति ने उसका कमरा साफ-सुथरा रख छोड़ने में कोई कसर नहीं रखी थी। रोहित ने गरिमा के कमरे की एक-एक चीज को अच्छी तरह से देखा। उसकी कॉपी, उसकी किताबें उसकी अलमारी कहीं कुछ नहीं मिला जो केस की प्रोग्रेस में मदद करता। फिर उसने उस कमरे की चाबी ली जिसमें गरिमा पढ़ाती थी। वह और हवलदार गरिमा के कोचिंग में प्रविष्ट हुए। वह एक छोटा सा कमरा था जो घर में ग्राउंड फ्लोर पर बना हुआ था। बैठक के बगल में। जिसमें गरिमा के लिए एक चेयर और सामने एक बड़ी सी मेज थी जिसके चारों तरफ दस-बारह प्लास्टिक की कुर्सियाँ और स्टूल रखे हुए थे। एक किताबों की रैक थी। गरिमा छोटे बच्चों के साथ-साथ कॉमर्स के बड़ी कक्षाओं के बच्चों को भी ट्यूशन पढ़ाया करती थी। रोहित ने उसके किताबों का रैक चैक करना शुरू कर दिया तभी किताबों के पीछे उसे कुछ पन्ने मुड़े हुए दिखे। उसने वह पन्ने उठाये और उन्हें देखने लगा। वह पन्नें लव लैटर थे। किसी ने गरिमा को लिखे थे उनमें से कुछ तो खून से भी लिखे गये थे किसी “वी” के द्वारा। उन

प्रेम पत्रों में गरिमा को गरिमा मैम के नाम से संबोधित किया गया था। जिससे यह साफ प्रतीत हो रहा था कि कोई सिरफिरा छा़त्र गरिमा के प्यार में एकतरफा पागल था।

उन खून से लिखे हुए प्रेम-पत्रों को ले कर वह घर में प्रीति के पास गया उस वक्त प्रीति किचन में दोपहर का खाना तैयार कर रही थी।

“यह गरिमा को उसके किसी छात्र ने खून से प्रेम-पत्र लिखे हैं। उसने अपना नाम तो नहीं लिखा है पर नाम का पहला अक्षर लिखा है “वी” आप जानती हैं किसी ऐसे छात्र को।”

“जी नहीं गरिमा ने मुझसे तो इस विषय में कोई बात नहीं की ना ही मुझे उससे ट्यूशन पढ़ने वाले छात्रों के बारे में ज्यादा जानकारी है कि कौन-कौन उससे ट्यूशन पढ़ने आया करता था। उसके भैया ने तो उसे अलग से पढ़ाने के लिए यह कमरा दे रखा था ताकि उसे और हमें डिस्टर्ब ना हो”

रोहित ने वीरेन्द्र और नरेन्द्र से भी फोन पर इस “वी” के बारे में जानकारी जुटानी चाही लेकिन उनसे भी कुछ मालूम ना हो सका। फिर रोहित ने आस-पास के घरों से पूछताछ की तो दो-चार बच्चों के नाम पता चले जो गरिमा से पढ़ने आया करते थे लेकिन वह उस समय स्कूल मे थे। रोहित ने उनके स्कूल से आने का इंतजार किया तब उनसे उनके माँ-बाप के सामने पूछताछ की तब उसे पता चला कि कोई वैभव नाम का बारहवीं का छात्र था जो कि गरिमा से इकोनॉमिक्स की ट्यूशन पढ़ा करता था। वह ट्यूशन पढ़ते-पढ़ते गरिमा के एकतरफा प्यार में पागल हो गया था और उसे खून से प्रेम-पत्र लिखा करता था। वैभव दूसरे मोहल्ले में रहा करता था रोहित ने उसका घर पता किया और उसके घर पूछताछ के लिए पहुँच गया। वैभव के पिता एक कपड़े की दुकान में सेल्समैन थे। वह स्कूल नहीं गया था और घर में ही मिल गया था। जब से गरिमा की मौत हुयी थी उसने अपने आप को कमरे में बंद किया हुआ था और

रोता रहता था। माता-पिता को यही लगता था कि वैभव अपनी मैडम के मौत से बहुत दुःखी है उन्हें क्या पता था कि उनका नौनिहाल अपनी टीचर के प्यार में गिरफ्तार है।

रोहित ने हवलदार को वैभव के घर और उसके कमरे की तलाशी लेने को कहा। तलाशी में उन्हें वैभव की अलमारी से एक डायरी मिली जिसमें उसने गरिमा की फोटो चिपकायी हुयी थीं। रोहित ने वह डायरी अपने कब्जे में ले ली जिस पर वैभव पहले तो उग्र हो गया फिर एकाएक उसके कदमों में गिर पड़ा।

“सर!! इस डायरी को मुझसे मत छीनिए यही तो मेरे जीने का सहारा है। मेरी मोहब्बत की आखिरी निशानी है। अगर इसे भी आपने मुझसे छीन लिया जैसे किसी ने मेरी मैडम को मुझसे छीन लिया है तो मेरा इस दुनिया में जीने का क्या उद्देश्य रह जाएगा”- यह कहकर वैभव जोर-जोर से गरिमा का नाम लेकर रोने लगा।

उसकी माँ और यहाँ तक कि रोहित भी गरिमा के प्यार में पगलाए वैभव का यह हाल देखकर दंग रह गये।

वैभव से पूछताछ करने पर भी रोहित को कोई ऐसी जानकारी नहीं मिली जिससे वह इस नतीजे पर पहुँचता कि गरिमा की हत्या वैभव ने की है। वैभव तो उसे एक ऐसा किशोरवय छात्र लगा जो उम्र के इस पड़ाव पर अपनी शिक्षिका की ओर आकर्षित हो गया हो।

रोहित की समझ में नहीं आ रहा था कि गरिमा आखिर किसकी हवस का शिकार बनी और वह घर वापस आने की बजाय जंगल में क्या कर रही थी। उसने गरिमा,पंकज,प्रीति,वीरेन्द्र,नरेन्द्र,वैभव सब की कॉल डिटेल्स निकलवायी लेकिन नतीजा ढ़ाक के तीन पात ही रहा, मतलब- जीरो।

रोहित के ऊपर सब तरफ से दबाव था इस केस को जल्दी से जल्दी हल करने का और असली कातिल को सलाखों के पीछे पहुँचाने का। क्या सोशल मीडिया क्या समाचार पत्र क्या टी0वी0न्यूज चैनल्स और क्या छात्र संघ सब की निगाहें इस केस पर गड़ी हुयी थी। वैभव से पूछताछ करने की अगली सुबह रोहित थाने में बैठा इसी केस के बारे में सोच रहा था। तभी उसका मोबाईल बज उठा। उसने मेज पर सामने पड़ा मोबाईल उठाया तो उसमें "ग्रामइन",जो कि एक पॉपुलर सोशल मीडिया प्लेटफार्म था उसकी नोटिफिकेशन आयी हुयी थी जिसमें उसकी बहन रितिका ने उसकी और अपनी बचपन की राखी बांधते हुए एक स्टोरी लगायी थी। रोहित ने स्टोरी खोली और आत्मीयता से उस फोटो को देखने लग गया। तभी उसके दिमाग के किसी कोने में एक बत्ती जली, उसने तुरंत साइबर सेल को फोन करके कुछ निर्देश दिए और अपनी मोटर साईकिल पर साईबर सैल के ऑफिस की ओर लगभग उड़ चला।

वहाँ जाकर उसने दो-तीन घंटे गरिमा की हर सोशल मीडिया अकांउट को लगभग दो-चार बार अच्छे से खंगाला तब जाकर उसे "ग्रामइन" पर एक हाईलाईटेड स्टोरी में उसे एक रोशनी की किरण दिखायी दी। अब यही स्टोरी उसे कातिल तक पहुँचने में मदद कर सकती थी या शायद कर चुकी थी।

गरिमा की मौत के पंद्रह दिन बीत चुके थे। वीरेन्द्र काफी गमगीन था। उसने इस बीच अपनी दुकान भी बंद रखी हुयी थी। जिससे उसकी आय पर भी काफी फर्क पड़ा था लेकिन बेटी समान बहन की मौत का वीरेन्द्र को काफी सदमा लगा था। सुबह के आठ बजे थे। प्रीति के मनाने पर किसी तरह वीरेन्द्र अपनी दुकान खोलने के लिए राजी हुआ कि दुनिया से जाने वाले को रोक तो सकते नहीं लेकिन संसार तो आगे बढ़ाना ही है ना।

"लीजिए आप नाश्ता कर लीजिए"- प्रीति वीरेन्द्र की नाश्ते की प्लेट खाने की मेज पर रखते हुये बोली। वीरेन्द्र उस वक्त पूजा कर रहा था। वह बिना नहाए

एवं पूजा किये नाश्ता नहीं करता था। बैठक में ही वीरेन्द्र ने छोटा सा मंदिर दीवार पर लगाया हुआ था जिसमें वह तल्लीनता से हर सुबह नहा-धो कर पूजा किया करता था।

"मन नहीं है" गरिमा की माँ"- प्रीति को वह "गरिमा की माँ" कह कर ही संबोधित किया करता था। यह संयोग ही था कि गरिमा की मौत के बाद एवं शादी के इतने सालों के बाद प्रीति की कोख हरी हुयी थी। वह माँ बनने वाली थी।

"मन का क्या है जी। मैंने और नरेन्द्र भईया ने समझाया ना आपको कि संसार तो आगे बढ़ाना ही है। मरने वाले के साथ मरा तो नहीं जा सकता ना। हमें अपनी आने वाले भविष्य के बारे में भी तो सोचना है"- प्रीति एक साँस में ही सब कुछ कह गयी।

"आने वाला भविष्य??मतलब????- वीरेन्द्र दुविधा में फंसकर बोला।

"मतलब यह कि आपको पापा बोलने वाला आने वाला है"- प्रीति ने वीरेन्द्र के सीने से सट कर उसके शर्ट के बटन बंद करते हुए कहा।

"क्या!!!! सचमुच। शादी के इतने सालों के बाद यह चमत्कार"- वीरेन्द्र ने अपने एक हाथ से प्रीति की ठुड्डी ऊपर करते हुए उसकी आँखों में झाँकते हुए मुस्कुरा कर कहा। गरिमा की मौत के पंद्रह दिन के बाद उसके उदास चेहरे पर अपने बच्चे के आने की खबर के बारे में सुन कर मुस्कान आयी थी।

"जी!!! यह सब माता रानी का ही चमत्कार है"- कहकर प्रीति ने खुद को वीरेन्द्र से हल्के से छुड़ाया और वहीं पास में बने हुए मंदिर में दुर्गा माता की मूर्ति के सामने सिर झुका कर दोनों हाथों को जोड़कर खड़ी हो गयी।

“वीरेन्द्र भी उसके पीछे दुर्गा माता की मूर्ति के आगे नतमस्तक हो कर खड़ा हो गया।”

तभी दरवाजे पर पुलिस की जीप आ कर रूकी। गेट खोल कर इंस्पेक्टर रोहित और तीन कांस्टेबल अंदर आए। उन्हें अंदर आते देख कर वीरेन्द्र और प्रीति ने एक दूसरे की ओर सवालिया निगाहों से देखा।

“लगता है नाश्ते की तैयारियाँ हो रही थी। कोई खास मौका”- रोहित ने खाने की प्लेट में हलवा-पूरी देखकर कहा।

“नहीं ऐसा कुछ नहीं है”- वीरेन्द्र ने झेंपते हुए कहा।

“वीरेन्द्र जी! आप अपने घर के सभी सदस्यों को, आई मीन प्रीति जी तो यहीं है, वो आपका छोटा भाई नरेन्द्र, उसको भी बुला लीजिए मुझे आप सब से कुछ बात करनी है।”- रोहित ने वीरेन्द्र और प्रीति को गहरी निगाहों से देखते हुए कहा।

“ठीक है”- वीरेन्द्र ने संक्षिप्त उत्तर देते हुए नरेन्द्र को आवाज लगायी। नरेन्द्र उस समय सो कर ही उठा था। और बाथरूम में दैनिक कार्यो से निवृत्त ही हो रहा था। थोड़ी देर के बाद नरेन्द्र भी फ्रेश हो कर एक हाथ में मोबाईल ले कर ड्राइंगरूम में आ गया।

“जी भईया”- नरेन्द्र ने वीरेन्द्र को संबोधित किया।

वीरेन्द्र ने नरेन्द्र का संबोधन सुनने के बाद रोहित की तरफ देखा।

“एक्चुअली मैं यहाँ ये कहने आया हूँ कि मैंने गरिमा रेप एंड मर्डर केस क्रेक कर लिया है। - रोहित ने ससपैंस तोड़ा।

“मतलब”- वीरेन्द्र ने रोहित से आशावादी स्वर मे पूछा। रोहित की बात सुन कर नरेन्द्र और प्रीति एक दूसरे की ओर देखने लगे।

“मतलब यह वीरेन्द्र जी कि गरिमा का हत्यारा यहीं हमारे बीच मौजूद है”- रोहित ने विस्फोट किया। वीरेन्द्र और प्रीति कुछ समझ पाते नरेन्द्र ने तेजी से बाहर भागने का उपक्रम किया। लेकिन रोहित मुस्तैद था उसने भागते हुए नरेन्द्र को पकड़ लिया। नरेन्द्र उसके पकड़ से छूटने की कोशिश करने लगा। लेकिन कामयाब ना हो सका।

वीरेन्द्र हकबकाया सा कभी रोहित को तो कभी नरेन्द्र को देख रहा था। प्रीति का चेहरा सपाट था।

रोहित ने नरेन्द्र को धकेल कर सोफे पर बैठा दिया था।

“इंस्पेक्टर साहब! ये सब क्या हो रहा है”- वीरेन्द्र ने नरेन्द्र की ओर देखते हुए कहा जो अब भी भागने के फिराक में था लेकिन हवलदार ने उसे पकड़ रखा था।

“वीरेन्द्र जी! आपकी बेटी समान बहन का हत्यारा और कोई नहीं ये आपका छोटा भाई नरेन्द्र ही है”- रोहित ने नरेन्द्र की ओर देखते हुए कहा। जो कि आँखों में जलते हुए अंगारे लिए रोहित को ही देख रहा था।

वीरेन्द्र को मानों काटो तो खून नहीं उसका चेहरा इस रहस्योद्घाटन से कोरे कागज की तरह सफेद पड़ा हुआ था।

“आपकी पत्नी प्रीति और आपके छोटे भाई नरेन्द्र का अवैध संबंध चल रहा है। आप सारा-सारा दिन दुकान में रहते हैं और यहाँ आपकी पत्नी और छोटा भाई आप ही के बिस्तर पर रंगरेलियाँ मना रहे होते थे। किसी तरह बंद कमरे में गूंजती इन दोनों की हवस की सिसकारियों की भनक आपकी बहन गरिमा को

पड़ गयी। उसने नरेन्द्र और प्रीति को धमकी दी कि यह दोनों अपनी गंदगी करना बंद कर दें नही तो वह आपको सब कुछ बता देगी। बस यही बात उसकी मौत का कारण बन गयी।

"कुत्ते!!!! तूने ये क्या किया अपनी ही बहन को मार डाला। अपनी बहन को राखी के दिन तूने मौत का तोहफा दिया।- वीरेन्द्र ने बिजली की फुर्ति से नरेन्द्र का गिरेहबान पकड़ कर उसे दो-चार थप्पड़ लगाए - और तू रांड, कुतिया, बदचलन, मैं तेरे को पूरा नहीं पड़ रहा था क्या, जो मेरे ही घर में मेरे ही छोटे भाई के साथ मेरे ही बिस्तर पर कलाबाजियाँ कर रही थी।"- प्रीति जो नरेन्द्र से दो कदम की दूरी पर खड़ी थी उस पर भी वीरेन्द्र झपटा लेकिन हवलदार ने उसे बीच में ही रोक लिया।

"हाँ हाँ हाँ मैं रांड हूँ, मैं बदचलन हूँ पर मुझे बदचलन बनाया किसने? किसने बनाया मुझे बदचलन, "तूने वीरेन्द्र तूने"- प्रीति जो अब तक सपाट चेहरा लेकर खड़ी हुयी थी अचानक गुस्से से उसका चेहरा लाल भभूका हो गया। कहर भरी निगाहों से उसने वीरेन्द्र को देखते हुए कहा।

"मैंने??? मैंने क्या किया हरामजादी। मैंने क्या किया"

"तूने कुछ किया ही तो नहीं कभी। तेरे लिए तो बस तेरे भाई-बहन और तेरी दुकान। तेरी जिंदगी में मेरी अहमियत सिर्फ तेरे गंदे अंडरवीयर धोने तक की है। तुझे पत्नी नहीं अपने भाई-बहन के लिए नौकरानी चाहिए थी। मैंने शादी तुझसे की थी। तेरी जिम्मेदारियों से नही जो तू अपने सिर पर लेकर घूमता रहता है। मेरे भी कुछ सपने हैं अरमान हैं। शादी के इतने साल हो गए बच्चे के लिए तूने तरसा दिया मुझे, कि जब तेरी बहन के हाथ पीले होंगे तब हम बच्चा करेंगे। क्यों भाई मुझे माँ कब बनना है कब नहीं ये भी तू ही डिसाईड करेगा क्या? है क्या तुझमें जो तुझे कोई पसंद करे। तेरे शरीर से पसीने की बदबू आती है। कपड़ो में कभी आटा तो कभी धूल लगी रहती है। तू आज के जमाने के हिसाब

से चलना ही नहीं चाहता। बस रामू काका बन के जिम्मेदारियाँ उठाना ही तेरा मुख्य मकसद है। तेरे साथ चलने में मुझे शर्म आती है। अपने लिए मैंने जो सपनों का राजकुमार सोचा था वो राजकुमार नरेन्द्र है। देख इसको और देख खुद को। तेरा ही भाई है ना ये बिल्कुल फिल्मस्टार की तरह लगता है । इसने मुझे पाने के लिए खून तक बहा दिया और एक तू है जिसने मुझसे माँ बनने का सुःख छीन लिया। वैसे तो तू तीस साल का है और इस उम्र में तू पचास साल का बुड्ढा लगता है। मेरी सहेलियाँ अपने स्मार्ट पतियों के साथ सोशल मीडिया में फोटो डालती हैं लेकिन तेरे साथ फोटो तो दूर मुझे तो मुझे दिखने में भी शर्म आती है। नरेन्द्र की जिम में तराशी हुयी बाजूओं में मुझे हिफाजत मिलती है। उसकी मजबूत छाती पर सिर रखकर मुझे सुकून मिलता है। नरेन्द्र जब मेरे ऊपर छा जाता है तो उसकी चौड़ी पीठ पर अपने दोनों हाथों की उंगलियाँ फेरने में मुझे स्वर्ग का अनुभव होता है। मुझे औरत होने का सुख मिलता है। वह अहसास मुझे तुझ से कभी नहीं मिला। हाँ, बनाए मैंने नरेन्द्र के साथ संबंध, तुझ जैसा पति होने के बावजूद, तो क्या करूँ। मेरे कुछ अरमान नहीं है। है तेरे बस का कुछ? मुझे “मेरे” बच्चे की माँ बनना था तेरी बहन की माँ नहीं?

अच्छा किया इस नरेन्द्र ने उसको मार दिया उस गरिमा को, साली हम दोनों के बीच में आ रही थी। खुद तो अपने यार के साथ कॉलेज के नाम पर बाहर गुलछर्रे उडा रही थी और मेरी ख़ुशी उस कमीनी से देखी नहीं गयी। ऐसा ही मर्द मुझे हमेशा से चाहिए था जो मुझे पाने के लिए किसी भी हद तक चला जाए, और वो मर्द नरेन्द्र है।”- प्रीति एक ही रौ में वीरेन्द्र की आँखों में आँखें डाल कर सब कुछ कह गयी। उसके चेहरे पर वीरेन्द्र के लिए बेशुमार नफरत साफ झलक रही थी।

“जब इतना सब बता दिया है तो ये भी बता दे कि ये, ये, बच्चा किस का है” वीरेन्द्र ने आँखों में आँसू भर कर प्रीति के पेट की ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा।

बच्चा पैदा करने के लिए मेहनत की जरूरत है जो तेरे बस का है नहीं। तो ये बच्चा मेरे शेर आशिक का है”- प्रीति ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए बेशर्मों की तरह वीरेन्द्र को आँख मारते हुए कहा और फिर अनुराग भरी दृष्टि से नरेन्द्र की ओर देखा जो हवलदार की गिरफ्त से छूटने के लिए जोर लगा रहा था।

कमरे में काफी तनावपूर्ण माहौल था। वीरेन्द्र के घर के बाहर पुलिस की गाड़ी देख कर मौहल्ले वालों की भीड़ जमा हो गयी थी।

रोहित ने हवलदार को नरेन्द्र को सोफे पर बिठाने का इशारा किया। इधर रोहित के साथ तीन कांस्टेबलों में से एक महिला कांस्टेबल थी जिसने प्रीति को काबू में किया हुआ था।

“कैसे मारा गरिमा को”? रोहित ने नरेन्द्र पर सवाल दागा।

नरेन्द्र चुप रहा।

“बोल कमीने कैसे मारा अपनी बहन को”- रोहित का एक झन्नाटेदार थप्पड़ नरेन्द्र के बांये गाल पर पड़ां।

“मैं और प्रीति एक दूसरे से प्यार करते थे। इस बात की भनक गरिमा को किसी तरह लग गयी वो जिद करने लगी कि हम दोनों अपने रिश्ते को खत्म कर दें नहीं तो वो भईया को सब कुछ बता देगी। बस तभी से गरिमा को मारने की हम प्लानिंग करने लगे। रक्षाबंधन वाले दिन वह मेरे बुआ के लड़के सूरज को राखी बांधने जाने वाली थी बस इसी दिन मैंने ठान लिया कि उसे इस दुनिया से रूख्सत कर दूंगा।

“इस प्लान में तेरे अलावा कौन-कौन शामिल था”- रोहित ने अगला सवाल दागा।

नरेन्द्र चुप रहा और नीचे जमीन पर देखने लगा।

तभी रोहित ने उसके बाल पकड़ कर उसका सिर ऊपर किया और उसके गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ रसीद किया।

“मैं और मेरे चार दोस्त”- नरेन्द्र ने गाल सहलाते हुए जवाब दिया।

“नाम बता उनका”

“आनंद, सुभाश, नीरज और टीटू”- नरेन्द्र ने मरी हुयी सी आवाज में रोहित की बात का जवाब दिया।

रोहित ने नरेन्द्र से उन चारों लड़कों का पता और फोन नंबर लिया और थानें में फोन कर टीम को उन चारों के घर पर दबिश देने और उन्हें गिरफ्तार करने के आदेश दिए।

“गरिमा को जंगल में कैसे बुलाया”

“सूरज के पास एक सफेद रंग का कुत्ता था मिल्की। जिसे गरिमा बहुत प्यार करती थी। जब वह सूरज को राखी बांधने गयी थी तब मिल्की की तबीयत खराब थी। मिल्की को जानवरों के हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। टीटू ने आई0ए0 टेक्नोलॉजी की मदद से सूरज की आवाज में गरिमा को फोन किया जब वह बस अड्डे पर थी और उसे मिल्की के मरने की सूचना दी और यह कहा कि वे लोग उसे जंगल में दफनाने जा रहे हैं। इस सूचना से गरिमा दुःखी हो गयी। वह खुद को रोक ना पायी और मिल्की को आखिरी बार देखने के लिए वह जंगल पहुँच गयी। जंगल में थोड़ा अंदर जाने पर गरिमा को आनंद,

सुभाष, नीरज और टीटू मिले जो उसे जबरदस्ती उठा कर अंदर ले गये और बारी-बारी से उसके साथ।''

''उसके साथ क्या''????- नरेन्द्र को बीच में चुप होता देख रोहित दहाड़ा।

''सबने उसका बलात्कार किया''

''सबने किसने? नाम ले''

''आनंद, सुभाष, नीरज और टीटू''

''और तूने?''- इंस्पेक्टर ने कहर भरी निगाहों से नरेन्द्र की तरफ देखा।

''मैंने?''

''हाँ हवस में लिपटे हुए कीड़े तूने भी अपनी बहन का बलात्कार किया है। उसके बदन पर जो सीमन के ट्रेसेस मिले हैं यहाँ तक कि उसके गालों और होठों पर जो काटने के निशान पाये गये हैं उसमें फॉरेंसिक जाँच में हमें तेरा डी0एन0ए मिला है।''- रोहित ने रहस्योद्घाटन किया। उसके इस रहस्योद्घाटन से वहाँ मौजूद वीरेन्द्र और प्रीति यहाँ तक कि पुलिस वालों के कानों में भी जैसे पिघला हुआ सीसा उड़ेल दिया हो।

''अब बोलता है या मैं अपने अंदाज से बुलवाऊँ तुझसे''

''मैंने अपने दोस्तों को गरिमा को बस मारने के लिए कहा था इसके लिए मैंने उन्हें दो लाख रूपये देने का वादा किया था। साठ हजार मैं पहले दे चुका था और बाकि गरिमा का काम तमाम करने के बाद। लेकिन उन लोगों ने उसे जंगल के अंदर ला कर उसके साथ जबरदस्ती करनी शुरू कर दी थी। मैं छिप कर गरिमा का बलात्कार होते हुए देख रहा था। जब उन लोगों ने तीन घंटे के बाद गरिमा को छोड़ा तो मैं सामने आया। लुटी-पिटी घायल गरिमा की आँखों

में मुझे देखकर आशा की किरण जागी की उसका भाई आ गया है और अब वह उसकी मदद करेगा। इन इंसान रूपी हैवानों से उसकी रक्षा करेगा। लेकिन मेरे मन में शैतान घर कर गया था। उन लोगों ने गरिमा के बदन पर कपड़े के नाम पर एक रेशा भी नहीं छोड़ा था। गरिमा को अपने सामने जमीन पर बिल्कुल नंगी देखकर मेरे अंदर का पाशविक पुरुष जाग गया था जिसके लिए औरत सिर्फ एक भोग की वस्तु होती है। जिसके लिए औरत का उसके साथ रिश्ता या औरत की उम्र कोई मायने नहीं रखती। मायने रखती है तो सिर्फ और सिर्फ उसकी हवस जिसे वह औरत के बदन को रौंद कर किसी भी कीमत पर मिटाना चाहता है। मैंने भी, मैंने भी गरिमा का बलात्कार किया और उसके बाद गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी।''

''नीच, नराधम, नरपिशाच यह तूने क्या किया अपनी ही बहन का बलात्कार छिः''- वीरेन्द्र ने नरेन्द्र का कॉलर पकड़कर उसे ताबड़तोड़ कई सारे थप्पड़ जड़ दिए।

रोहित के इशारा करने पर कांस्टेबल ने वीरेन्द्र को पकड़ कर किनारे किया और नरेन्द्र को उसकी गिरफ्त से आजाद किया।

नरेन्द्र चुपचाप एक कोने में सिर झुका कर खड़ा हुआ था।

''आपके पास इसके खिलाफ क्या सुबूत है? वीरेन्द्र ने रोहित से पूछा शायद वह अब भी यह उम्मीद कर रहा था कि जो कुछ उसके कानों ने गरिमा हत्याकांड का खुलासा सुना वह सब झूठ निकल जाए।

''सुबूत है इसका डी0एन0ए। सुबुत है इसकी कॉल रिकार्ड। सब को पता है कि नरेन्द्र फोन का एडिक्ट है वह हर फोन/मैसेज का जवाब एक मिनट से भी कम समय में देता है । लेकिन रक्षाबंधन के दिन ऐसा क्या हुआ कि इसने करीब सात घंटे तक किसी का फोन ही नहीं उठाया। इसके कॉल रिकार्ड से यह बात

सामने आयी कि उस दिन बारह बजे से रात के नौ बजे तक नरेन्द्र के फोन में एक फोन ना रिसीव हुआ ना ही मैसेजेस का आंसर किया गया। यह बात नरेन्द्र की पर्सनैलिटी से मेल नहीं खाती थी। और जानते हैं वीरेन्द्र साहब मुझे आपके भाई पर शक कैसे हुआ?

"कैसे"?

"ऐसे"- रोहित ने जेब से एक पैकेट निकाला और उसे हवा में अपना बायें हाथ में पकड़कर लहराया- "जब पुलिस को गरिमा की लाश मिली तो उसकी मुट्ठी बंद थी। पोस्टमार्टम में उसकी बंद मुट्ठी खोली गयी तो उसमें यह राखी मिली। ऐसी राखी बाजार में बहुत मिलती है पर जब मैंने गरिमा का सोशल मीडिया अकांउट चैक किया तो उसने रक्षाबंधन के दिन एक सेल्फी पोस्ट की थी स्टोरी के रूप में जिसमें आप तीनों भाई बहन हो और उस फोटो में आप दोनों ने अपनी कलाइयां ऊपर कैमरे की तरफ की हैं जिससे आपकी राखी हाईलाईट हो गयी। बस इसी सोशल मीडिया स्टोरी से मुजरिम पुलिस के शक के दायरे में आ गया। जब से इंवेस्टीगेशन शुरू हुयी है आपकी राखी मैंने आपकी कलाई में देखी है लेकिन नरेन्द्र के हाथ में नहीं क्योंकि नरेन्द्र की राखी तो गरिमा की मुट्ठी में कैद थी वह उसके कलाई में कैसे हो सकती थी । हमें इंतजार था तो बस पुख्ता सबूत के क्योंकि कोर्ट में सिर्फ एक राखी के बेसिस पर हम नरेन्द्र को मुजरिम नहीं ठहरा सकते थे"

तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी।

"आक थू!"- प्रीति ने नरेन्द्र के पास जाकर उसके मुँह पर थूक दिया।

नरेन्द्र को बहुत आश्चर्य हुआ। वह थूक अपनी शर्ट के बाजू से पोंछते हुए प्रीति को फटी-फटी आँखों से देखने लगा जिसकी आँखों में अब नरेन्द्र के लिए मोहब्बत के भाव नहीं बल्कि नफरत के अंगारे दहक रहे थे।

“यह क्या प्रीति। यह सब मैंने तुम्हारे लिए ही तो किया”- नरेन्द्र रूआंसे स्वर में प्रीति की ओर देख कर कहा।

“मर गयी प्रीति आज से तेरे लिए। मैं जानती हूँ कि यह सब तूने मेरे लिए किया और कुछ समय पहले तक मुझे तुझ पर गर्व भी था कि मेरे आशिक ने मुझे पाने के लिए अपने रास्ते के हर कांटे को हटा दिया ऐसा ही मर्द चाहा था मैंने अपने लिए। खूबसूरत, मजबूत, मेरा ख्याल रखने वाला और मुझसे बेहद मोहब्बत करने वाला। एक प्रेमिका तुझ पर गर्व कर सकती है नरेन्द्र लेकिन प्रेमिका होने के साथ-साथ मैं एक औरत भी हूँ। तू खूनी है, बलात्कारी है, मुजरिम है, तू उस राखी का, उस बंधन का, उस विश्वास का जो एक औरत एक मर्द पर करती है कि मुश्किल घड़ी में वह उसकी रक्षा करेगा। इस भरी दुनिया में उसका भाई ही एक ऐसा शख्स है जो उसके साथ बचपन से बड़ा हुआ है उसके हर सुःख दुःख का साथी रहा है जिसके साथ वह खेली है, स्कूल गयी है, लडी है, झगड़ी है फिर भी एक धागे के साथ उसका रिश्ता अपने भाई के साथ गहरा होता गया है। मैं खुश थी कि तूने मुझे माँ बनने का सुख दिया लेकिन मैं इस बच्चे को क्या बताऊँगी कि उसके बाप ने अपनी माँ जायी सगी बहन के जिस्म को वहशियों की तरह नोचा, खसोटा, लूटा। नरेन्द्र एक प्रेमिका तुझे माफ कर सकती है लेकिन एक औरत तुझे कभी माफ नहीं करेगी। एक बहन अपने भाई के द्वारा किये गये इस विश्वासघातघात को बर्दाश्त ना कर सकी और मरते-मरते पुलिस को अपने कातिल, अपने बलात्कारी की पहचान बता गयी”- कहते कहते प्रीति गुस्से और नफरत से फफक-फफक कर रो पड़ी।

अब केस आईने की तरह साफ था। रोहित नरेन्द्र को हथकड़ी लगा कर आस-पड़ोस के लोगों की भारी भीड़ के बीच से पुलिस जीप में बैठा कर थाने ले गया।

प्रीति ने चोर निगाहों से वीरेन्द्र की तरफ देखा जो नरेन्द्र को जाते हुए देख रहा था। वो पछता रही थी उसे समझ में आ गया था कि उसने खुद अपने हाथों से ही अपने सुखी संसार में आग लगायी है। उसका पति वीरेन्द्र भले ही साधारण दिखने वाला, साधारण तरीके से जिंदगी जीने वाला इंसान हो लेकिन वह नरेन्द्र की तरह एक खूनी, बलात्कारी नहीं था। आज के दौर में जब भाई, भाई का दुश्मन है तब वीरेन्द्र ने अपने छोटे भाई बहन के लिए पिता की भूमिका निभायी उनका हर तरह से ख्याल रखा। वीरेन्द्र उसके नहीं बल्कि वह ही वीरेन्द्र के लायक नहीं है। यह सोचकर वह घर छोड़ कर जाने के लिए अपना बैग पैक करने लगी।

तभी पीछे से वीरेन्द्र ने उसके कंधे पर हाथ रखा। प्रीति आंसुओं से भरा हुआ चेहरा लिये उसकी तरफ मुड़ी।

“कहाँ जाने की तैयारी हो रही है?”

“मैं आपके लायक नहीं हूँ। ये सब मेरी वजह से हुआ है। मैं अब यहाँ और नहीं रह सकती।” - प्रीति ने बैग पैक करते हुए डबडबायी आँखों से वीरेन्द्र की ओर देखकर कहा।

“देखो प्रीति जो हुआ उसमें मैं भी बराबर का जिम्मेदार हूँ। मैं भूल गया था कि जब हम किसी औरत को ब्याह कर अपने घर में लाते हैं तो वह हमारी पत्नी होती है हमारे या हमारे घरवालों की नौकरानी नहीं। उसकी भी खुद की जिंदगी है, सपने है, शौक है। मैं अपने भाई-बहन का अच्छा बड़ा भाई बनने के चक्कर में एक खराब पति कब बन कर अपने ही घर में कब चिंगारी लगा बैठा मुझे पता ही नहीं चल पाया।”- कहकर वीरेन्द्र प्रीति के दोनों हाथों को अपने दोनों हाथों से पकड़कर रोने लगा।

“तुम दोनों मुझे छोड़कर नहीं जा सकते। मैं अपने दो बच्चे तो खो चुका हूँ अब तीसरा नहीं खोना चाहता।”- वीरेन्द्र ने रोते हुए प्रीति की आँखों में झाँक कर कहा।

“तीसरा बच्चा?”- प्रीति ने आश्चर्य से पूछा।

“यही जो तुम्हारे कोख में पल रहा है। ये मेरा ही तो बच्चा है। मेरा खून है। इसे मेरा नाम ही मिलेगा”- वीरेन्द्र ने साड़ी के ऊपर से प्रीति के पेट को छूते हुए कहा।

“सच”- प्रीति को मानों अपने कानों पर यकीं ही नहीं हुआ। वह वीरेन्द्र के कदमों में झुक गयी।

“बस प्रीति बस मुझे और शर्मिंदा मत करो अब अपना घर संसार संभालों मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता”। - वीरेन्द्र ने प्रीति को उठाते हुए सीने से लगा कर कहा।

प्रीति ने भी वीरेन्द्र को अपने बांहों में ले लिया। वीरेन्द्र की सूझ-बूझ से उसकी गृहस्थी उजड़ने से बच गयी।

इधर नरेन्द्र को कोर्ट ने गरिमा हत्याकांड के लिए उम्रकैद की सजा सुनायी और उसके दोस्तों आनंद, सुभाष, नीरज और टीटू को भी पुलिस ने गरिमा के बलात्कार करने के लिए सात साल कैद की सजा सुनायी। इस हत्याकांड की गुत्थी सुलझाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी राखी ने जो गरिमा की मुट्ठी में शायद तब आयी होगी जब नरेन्द्र ने उस पर हमला किया होगा और अपने बचाव के चक्कर में गरिमा के हाथ में नरेन्द्र की कलाई से टूट कर राखी आ गयी होगी।

समाप्त